

# मेरा जीवन और क्रुरआन

डॉ० सैयद शाहिद अली

## विषय सूची

विषय	पृष्ठ
आमुख	3
मुझपर विभिन्न मुसीबतें क्यों आती हैं?	21
मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मुझे क्या सोचना...?	21
मुझपर जब कोई मुसीबत आती है तो क्या वह मेरी बर्दाश्त.....?	21
मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मैं क्या करूँ?	22
मुझे मुसीबत में क्या दुआ माँगनी चाहिए?	22
मैं मुसीबत में खुदा से किस चीज़ के साथ मदद मागूँ?	22
मुझे आराम और तकलीफ़ कब पहुँचती है?	22
वे कौन-से काम हैं जिनको करने से खुदा मुझे नापसन्द करता है?	22
वे कौन-से काम हैं जिनके करने से खुदा मुझे पसन्द करता है?	24
क्या खुदा मेरा इम्तिहान लेता है?	26
मुझे अपने जीवन में कितना कष्ट पहुँचता है?	26
मैं मनोरथ को कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?	26
मुझे लोगों से कैसा व्यवहार रखना चाहिए?	27
क्या मैं वह कह सकता हूँ जो मैं न करूँ?	28
मेरी बातचीत कैसी होनी चाहिए?	28
मेरी चाल कैसी होनी चाहिए?	29
मेरा खान-पान कैसा होना चाहिए?	29
मैं सीधे रास्ते पर कैसे जमा रह सकता हूँ?	29
मुझे मरते समय कैसा होना चाहिए?	29
मुझे किस रास्ते पर चलना चाहिए?	30
वह कौन-सा काम है जिसे करने से खुदा मुझे याद रखता है?	30

मुझे किसका आदेश मानना चाहिए?	30
मुझे कौन-से साहसवाले काम करने चाहिए?	30
मुझे अपने पूर्वजों का अनुसरण कब करना चाहिए?	31
वे कौन-से काम हैं जिनको करने से मुझे जन्नत मिल सकती है?	31
खुदा मुझे किन बातों के करने का आदेश नहीं देता?	33
मुझे किसपर भरोसा करना चाहिए?	33
मुझे किससे नहीं डरना चाहिए?	33
खुदा मुझसे कैसा व्यवहार चाहता है?	33
खुदा मुझे कब सही रास्ता नहीं दिखाता?	33
मुझे किन बातों पर ईमान रखना चाहिए?	35
मुझे किस दिन का डर रखना चाहिए?	35
मुझे किन बातों में बहस न करनी चाहिए?	35
मुझे किन चीजों पर सोचना चाहिए?	35
मेरे जीवन और मेरी मृत्यु का उद्देश्य क्या है?	36
मुझे दुनिया और आखिरत में अच्छा जीवन कैसे मिल सकता है?	36
मेरा दामन कैसा होना चाहिए?	36
दुनिया की चीजें क्या मेरे लिए हैं?	36
मुझे अपना धन किसे न देना चाहिए?	37
मैं किसी अच्छे काम का आरंभ करता हूँ किन्तु कामयाब नहीं हो पाता, तो क्या मुझे अपने इस प्रयास का बदला मिलेगा?	37
मुझे किस बात पर हमेशा जमे रहना चाहिए?	37
मैं अपने लेन-देन के मामलात कैसे करूँ?	37
मुझे किन लोगों से दोस्ती करनी चाहिए?	38
मुझे किन लोगों से दूर रहना चाहिए?	39
मैं किसके साथ अच्छा व्यवहार करूँ?	39
मैं सही मार्ग पानेवाले लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ?	39
खुदा मेरी परीक्षा कैसे लेता है?	39
मुझपर खुदा की दया कब होगी?	40

मुझे डर और दुख कब नहीं होगा?	40
खुदा से डरनेवाला बनने पर मुझे क्या मिलेगा?	40
खुदा का प्रिय बन्दा बनने पर मुझे क्या मिलेगा?	40
मुझे किससे डरना चाहिए?	40
मैं खुदा से मुहब्बत कैसे कर सकता हूँ?	41
क्या मुझे विभिन्न पैगम्बरों की शिक्षाओं में अन्तर करना चाहिए?	41
क्या मुझे विभिन्न पैगम्बरों में अन्तर करना चाहिए?	41
खुदा मेरी तौबा कब स्वीकार नहीं करता?	41
मैं खुदा को कब याद करूँ?	42
खुदा मुझे किन कामों के करने का आदेश देता है?	42
मेरे लिए क्या खाना जाइज़ है?	44
मेरे लिए क्या खाना नाजाइज़ है?	44
क्या खुदा मेरी हर बात को जानता है?	44
मुझे कैसे सुख प्राप्त हो सकता है?	44
मेरे लिए बड़ी नेमत या दौलत क्या है?	44
मुझे किस बात की तमन्ना न करनी चाहिए?	45
मुझे सबसे अधिक किस बात से बचना चाहिए?	45
मैं अपने माता-पिता से कैसा व्यवहार रखूँ?	45
मैं अपने माता-पिता का किस बात में आज्ञापालन करूँ?	46
खुदा की दृष्टि में मैं अत्याचारी कब बन जाता हूँ?	46
जब मुझे किसी ग़लत आदमी से कोई ख़बर मिले तो मुझे क्या...?	47
खुदा की दृष्टि में मैं किस आधार पर विभिन्न दर्जे पा सकता हूँ?	47
मैं खुदा की प्रसन्नता कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?	47
जब मैं दुआ माँगता हूँ तो क्या खुदा मेरे निकट होता है?	47
क्या मेरी दुआएँ स्वीकार की जाती हैं?	47
कोई व्यक्ति मुझे दुआ दे तो मैं क्या करूँ?	48
मुझे खुदा से क्या दुआ माँगनी चाहिए?	48
मुझे दुश्मनों की साज़िश कब हानि पहुँचा सकती है?	52

मैं प्रभावी कब हो सकता हूँ?	52
मैं अपने उद्देश्य को कैसे पा सकता हूँ?	52
खुदा से डर कर मैं नेक बना रहूँ तो मुझे क्या मिलेगा?	53
मैं खुदा व रसूल का आज्ञापालन करूँ तो क्या होगा?	53
मैं खुदा व रसूल का आज्ञापालन न करूँ तो क्या होगा?	53
गुनाह के बाद मैं खुदा की ओर कैसे पलट सकता हूँ?	53
मेरे गुनाह खुदा कब माफ़ करेगा?	53
मेरा जीवन कैसे अच्छा व्यतीत हो सकता है?	53
खुदा मुझे सही मार्ग कब दिखाता है?	54
खुदा का शुक्रगुज़ार बनने का मुझे क्या लाभ होगा?	54
कुरआन मेरे लिए कब मार्गदर्शक बनता है?	54
मुझे किस चीज़ से डरना और बचना चाहिए?	54
मैं नुकसान में कब रहूँगा?	54
मुझे जन्नत में जाने के लिए ईमान के अतिरिक्त और क्या करना होगा?	55
कौन-सा परिणाम मेरे लिए अच्छा है?	55
मेरे लिए वास्तविक मार्गदर्शन कहाँ है?	55
क्या लोगों के अच्छे या बुरे कामों के बारे में मुझसे पूछ-गछ होगी?	55
मुझे किसके रंग में रंगना चाहिए?	55
मुझे किस चीज़ की तरफ़ अग्रसरता दिखानी चाहिए?	56
क्या खुदा मेरे कुछ कामों को नहीं जानता?	56
कोई व्यक्ति मुझपर जुल्म करे तो मैं क्या करूँ?	56
मुझे अपने जीवन में क्या ज़ादेराह (पाथेय) रखना चाहिए?	56
मैं किसपर अपना धन खर्च करूँ?	57
क्या मेरे लिए ऐसी चीज़ें भी हैं जिनको मैं पसन्द करूँ और वे मेरे लिए हानिकारक हों या जिनको मैं नापसन्द करूँ वे मेरे लिए लाभदायक हों?	57
खुदा मुझे किस ओर बुलाता है?	57
क्या आखिरत में मैं अपने स्रष्टा से मिल सकता हूँ?	57
खुदा मेरा रक्षक और मेरा सहायक कब बनता है?	57

मुझे क्यों पैदा किया गया?	58
शैतान मुझे किस चीज़ से डराता है?	58
मुझे अपना धन क्यों खर्च करना चाहिए?	58
क्या मैं अपनी इच्छा से किसी को मार्ग पर ला सकता हूँ?	58
इबादत करने से मुझे क्या लाभ होगा?	58
मुझे गुनाह पर उभारनेवाली किन चीज़ों से बचना चाहिए?	59
संतान और धन मुझे क्यों दिए गए हैं?	59
ज़ालिम बनने के बाद भी क्या खुदा मेरा मार्गदर्शन करेगा?	59
खुदा मुझसे जंग का ऐलान कब करता है?	59
क्या मेरी नेकियाँ मेरी बुराइयों को मिटा देंगी?	59
मैं शैतान से कैसे सुरक्षित रह सकता हूँ?	59
क्या अल्लाह की रहमत मुझे घेरे हुए है?	60
क्या मेरे लिए दीन (इस्लाम) पर चलना कठिन है?	60
मेरी नेकियाँ कब बरबाद नहीं होंगी?	60
मुझे मेरे अच्छे और बुरे कामों का कितना बदला दिया जाएगा?	60
मुझे किस दीन को मानना चाहिए?	61
क्या दीन (धर्म) खुदा की दृष्टि में इस्लाम ही है?	61
क्या जन्नत में जाने के लिए मुझे कठिन इम्तिहान देना होगा?	61
क्या खुदा मेरे लिए प्रत्येक बात में आसानी चाहता है?	61
वह कौन-सा काम है जिसको करने से मैं नेक व परहेज़गार बन सकता हूँ?	62
मुझसे कोई गुनाह हो जाए तो मुझे क्या करना चाहिए?	62
वे कौन से काम हैं जिन्हें करने से दुनिया व आखिरत में मुझे अज़ाब होगा?	62
क्या मुझे अच्छे कामों के अतिरिक्त बुरे कामों में भी लोगों की सहायता करनी चाहिए?	62
मुझे किस व्यक्ति का कहना न मानना चाहिए?	63
मेरी क़ौम की दशा क्यों नहीं बदलती?	63
क्या आखिरत की तैयारी के साथ मैं दुनिया में भी अच्छा जीवन गुज़ारने की कोशिश कर सकता हूँ?	63

क्या मुझे कंजूसी करनी चाहिए?	63
मैं शैतान का कहना मानूँ तो क्या होगा?	63
मुझे खुदा कैसे आजमाता है?	64
मेरे लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) क्या हैं?	64
मुझे जन्नत पाने की शुभ सूचना कब मिल सकती है?	64
क्या खुदा मेरी हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है?	64
मुझे किस बात से बेपरवाह न होना चाहिए?	64
वे कौन से काम हैं जो मुझे जन्नत में ले जा सकते हैं?	65
जिस दीन पर चलने को खुदा मुझे कहता है क्या वह कोई नया दीन है?	65
क्या कोई ऐसा भी काम है जिसे करने से आखिरत में खुदा मुझे माफ़ न करे?	65
मुझे कैसी नेकी करनी चाहिए?	66
मुझे जन्नत में जाने के लिए ईमान लाने व इबादत के अतिरिक्त और किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए?	66
मेरा क़र्ज़दार अगर मेरा क़र्ज़ वापस न करे, तो मैं क्या करूँ?	67
क्या दावत खाकर मुझे और अधिक रुकना चाहिए?	67
खुदा मेरा काम कब बनने नहीं देता?	67
किसी की बुरी बात के जवाब में मुझे क्या करना चाहिए?	67
क्या जन्नत में, मैं अपने रिश्तेदारों से मिल सकता हूँ?	67
मुझे हानि और लाभ कब पहुँचता है?	68
खुदा मुझे जो चीज़ देता है उसे मैं क्या समझूँ?	68
मुझे खुदा से क्या माँगते रहना चाहिए?	68
मुझे अपनी निगाहों का कैसा इस्तेमाल करना चाहिए?	68
मैं खुदा की दृष्टि में कैसे इज़्ज़तवाला बन सकता हूँ?	68
अधिक अच्छा बदला मुझे कब मिल सकता है?	69
मेरा वास्तविक मित्र कौन है?	69
मैं अपने घरवालों को किस चीज़ का हुक्म दूँ?	69
मैं कितने समय तक अपने बच्चों को उसकी माँ का दूध पिलवा सकता हूँ?	69
मुझे अपने खानदान की विधवाओं का कितने समय बाद दूसरा निकाह	

करवाना चाहिए?	70
मुझे किस बात से सावधान रहना चाहिए?	70
मैं कौन-सा काम न करूँ?	70
मेरे लिए खुदा की याद का सबसे अच्छा तरीका क्या है?	70
मैं अपने रब को कैसे पुकारूँ ?	71
मैं खुदा से कैसे करीब हो सकता हूँ?	71
मैं अपने अतिरिक्त खास तौर पर और किसे जहन्नम से बचाने की कोशिश करूँ?	71
मेरे दिल को आराम और चैन कैसे मिल सकता है?	71
मेरे हज और कुरबानी में खुदा क्या देखता है?	71
मैं जो कुछ खुदा के रास्ते में खर्च करता हूँ, क्या मुझे उसका बदला मिलेगा?	72
खुदा ने मेरे लिए कौन-सा धर्म पसन्द किया है?	72
मैं नेकी कैसे कर सकता हूँ?	72
मुझपर हज कब फ़र्ज होता है?	73
मैं सीधे व सच्चे रास्ते पर कब हो सकता हूँ?	73
मुझे बहुत अच्छा बदला कब मिलेगा?	73
मुझे कैसा नहीं होना चाहिए?	73
मैं कामयाब लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ?	74
मैं अपना राज़दार किसे बनाऊँ?	74
खुदा मेरी तौबा कब स्वीकार करता है?	74
खुदा मेरी तौबा कब स्वीकार नहीं करता?	74
जो चीज़ मुझे नापसन्द है क्या वह हमेशा मेरे लिए हानिकारक होती है?	74
मेरे गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं?	75
खुदा मेरे लिए क्या चाहता है?	75
मेरे लिए किसकी मदद काफी होनी चाहिए?	75
ईमान के साथ मैं अच्छे कार्य भी करूँ तो क्या होगा?	75
मेरे पास अमानत रखवाई जाए तो मुझे क्या करना चाहिए?	76
वह कौन-सा काम है जिसके करने से मेरे दिल में बिगाड़ पैदा होता है?	76



मैं सबसे अधिक मुहब्बत किससे करूँ?	76
मैं खुदा की दृष्टि में सफल हो रहा हूँ, इस बात की मेरे लिए क्या निशानी है?	76
मेरा सबसे बुरा साथी कौन है?	77
मुझे खुदा को कैसे पुकारना चाहिए?	77
मेरे लिए जीवन की परिभाषा क्या है?	77
मुझे खुदा से कैसे मदद माँगनी चाहिए?	77
मेरा सबसे बड़ा वास्तविक शत्रु कौन है?	77
मैं खुदा से कैसे वफ़ादारी दिखा सकता हूँ?	78
मुझपर रोज़े रखना क्यों फ़र्ज़ किया गया है?	78
मेरा स्रष्टा मेरे लिए क्या चाहता है?	78
खुदा की निगाह में मैं ज़ालिम कब बनता हूँ?	78
मुझे क्या याद रखना चाहिए?	78
क्या खुदा मेरे सभी कामों को देख रहा है?	79
खुदा मेरा साथ कब देता है?	79
धन के सम्बन्ध में, मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए?	80
क्या मैं ज़बरदस्ती लोगों को इस्लाम की ओर बुला सकता हूँ?	80
ईमान लाने पर खुदा मेरे साथ क्या करता है?	80
अगर मैं खुदा के हुक्मों का इंकार करूँ तो क्या होगा?	80
मुझे किस दिन से डरना चाहिए?	80
मेरा भय और उदासी कैसे दूर होगी?	81
मैं खुदा के कुछ आदेशों को मानूँ और कुछ को न मानूँ तो क्या होगा?	81
क्या मैं अपने लाभ और अपनी हानि का स्वयं ज़िम्मेदार हूँ?	81
अच्छे काम में खर्च किए गए अपने धन का क्या मुझे बदला मिलेगा?	81
खुदा का दोस्त बनकर मुझे क्या लाभ होगा?	81
खुदा की नेमतें मुझे और अधिक कैसे मिल सकती हैं?	82
जब कोई मेरे साथ बुराई और ज़ुल्म करे तो मुझे क्या करना चाहिए?	82
खुदा मेरे दिल का मार्गदर्शन कब करता है?	82
मुझे किस बात पर ध्यान देते रहना चाहिए?	82

खुदा के आदेशों को मानने पर मुझे क्या लाभ होगा?	83
मेरा अंजाम कब अच्छा होगा?	83
अच्छे कामों में, मैं अधिक धन खर्च करूँ तो, क्या खुदा मुझे और अधिक धन देगा?	83
मेरे गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं?	83
मुझे बुरे कामों से क्या चीज़ रोक सकती है?	83
आखिरत का घर (जन्नत) मुझे कैसे मिलेगा?	84
क्या मैं खुदा के साथ किसी दूसरे को अपनी मदद के लिए पुकार सकता हूँ?	84
क्या अच्छे या बुरे काम करने का मुझपर कोई प्रभाव पड़ता है?	84
वह कौन-सा काम है जिसको भूल जाने से मैं स्वयं को भूल जाता हूँ?	84
आखिरत में मेरी कामयाबी से क्या मुराद है?	84
अगर मैं खुदा के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करूँ तो क्या वह दुनिया व आखिरत (परलोक) में मेरी सहायता करेगा?	84
अगर मैं इस्लाम से पलट जाऊँ तो क्या होगा?	85
इस जीवन में मुझे जो कुछ मिलता है, क्या आखिरत में उन सबका हिसाब देना होगा?	85
मुझे अपनी संतान और धन में विशेष तौर पर किस चीज़ से होशियार रहना चाहिए?	85
मुझे गुस्सा आए तो मैं क्या करूँ?	85
क्या आखिरत में मेरा कोई सहायक होगा?	85
मेरा विनाश कब हो सकता है?	86
क्या मेरी रोज़ी (जीविका) खुदा के ज़िम्मे है?	86
मुझे किस तरह व्यापार करना चाहिए?	86
मैं दान कैसे दिया करूँ?	87
मेरे वादे कैसे होने चाहिए?	88
क्या मेरे वादों के बारे में मुझसे पूछा जाएगा?	88
किन क़समों पर मेरी पकड़ होगी और किन पर नहीं?	88
शैर-मुस्लिमों से किए गए अपने वादे को क्या मैं तोड़ सकता हूँ?	88

मुझे किस बात की क़सप खानी चाहिए?	89
मुझे धन, ज्ञान और आदर आदि अत्यधिक कैसे मिल सकते हैं?	89
क्या इस जीवन में मिली चीज़ों का मुझे आखिरत में हिसाब देना होगा?	89
मैं सही मार्ग पर कैसे रह सकता हूँ?	89
मेरे लिए ख़ुदा की निशानियाँ कहाँ हैं?	89
मेरा वास्तविक घर कौन-सा है?	90
ख़ुदा मेरा इम्तिहान कैसे लेता है?	90
मुझे किन लोगों से ईर्ष्या न करनी चाहिए?	90
मेरे सभी अच्छे काम बेकार कब हो सकते हैं?	90
मुझे वास्तविक हानि कब हो सकती है?	90
मुझे अपने शत्रु के साथ कैसा बर्ताव रखना चाहिए?	91
मुझपर औरतों का कितना हक़ है?	91
ख़ुदा ने मुझसे किस चीज़ का वादा किया है?	91
मैं किसी चीज़ के पाने या खोने पर क्या न करूँ?	91
मैं स्वयं को और अपने घरवालों को विशेष तौर पर किस चीज़ से बचाऊँ?	92
मैं किस चीज़ की चिन्ता करूँ?	92
जब मुझसे कोई गुनाह हो जाए तो मैं ख़ुदा से कैसी आशा रखूँ?	92
दुनिया में बहुत-से लोग धन के आधार पर मुझसे बढ़कर या मुझसे कमतर क्यों हैं?	92
मैं सही रास्ते पर कब होता हूँ?	93
ख़ुदा मेरी तौबा कब क़बूल करता है?	93
ख़ुदा मेरी तौबा कब क़बूल नहीं करता?	93
ख़ुदा और रसूल के आदेशों को सुनकर मुझे क्या करना चाहिए?	94
ख़ुदा का आज्ञापालन करने पर मुझे क्या मिलेगा?	94
आखिरत में सफलता पाने के लिए मुझे कितनी कोशिश करनी चाहिए?	94
कुरआन पढ़ते समय मुझे क्या करना चाहिए?	94
मेरे प्रयास कब बरबाद न होंगे?	95

इस जीवन रूपी इम्तिहान में मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए?	95
मुझे दोगुना सवाब कब मिलता है?	95
मैं किन कामों पर खुशखबरी सुनने का हक्कदार हो सकता हूँ?	95
मुझे किससे नहीं डरना चाहिए?	95
मैं सही रास्ता कैसे पा सकता हूँ?	96
मुझे बुरा खयाल आए तो मैं क्या करूँ?	96
मुझे किसपर भरोसा करना चाहिए?	96
मेरे दिल की बेचैनी कैसे दूर हो सकती है?	98
मेरा बुरा साथी कौन है?	98
क्या कोई बुरा काम करके मैं खुदा से बच सकता हूँ?	98
क्या मैं अपने ऊपर किए गए अन्याय का बदला ले सकता हूँ?	99
अगर कोई मेरे साथ बुराई करे और मैं उसे माफ़ कर दूँ तो मुझे क्या मिलेगा?	99
मैं लोगों को खुदा के दीन की तरफ़ कैसे बुलाऊँ?	100
मुझे क्या चीज़ छोड़नी चाहिए?	100
अगर मैं खुदा का आज्ञापालन न करूँ तो क्या होगा?	100
जब मुझे गुस्सा आए तो मुझे क्या करना चाहिए?	100
मुझे किन चीज़ों से खुदा की शरण लेनी चाहिए?	100
मुझे किसका कहना न मानना चाहिए?	101
क्या मुझे अच्छे या बुरे कार्य करने के सीमित अवसर प्राप्त होंगे?	101
क्या मेरे गुनाहों का बोझ कोई दूसरा व्यक्ति उठा सकता है?	101
क्या किसी व्यक्ति के गुनाह का प्रभाव मुझपर पड़ सकता है?	102
क्या जन्नत में मेरी सभी इच्छाएँ पूरी हो सकती है?	102
मुझे अपने जीवन में किसे नमूना बनाना चाहिए?	102
खुदा की दृष्टि में मेरी कामयाबी से क्या मतलब है?	102
क्या मेरा खुदा से कोई सौदा हुआ है?	103
मेरे कार्य सही कैसे हो सकते हैं?	103
मेरे लिए सबसे बड़ी कामयाबी क्या है?	103
खुदा से डरने पर आखिरत में मुझे क्या लाभ होगा?	103

ईमान लाने के अतिरिक्त मुझे और क्या करना चाहिए?	104
ईमान लाने के बाद भी क्या खुदा मेरा इम्तिहान लेगा?	104
मुझे किस चीज़ को पाने के लिए बहुत अधिक कोशिश करनी चाहिए?	104
वे कौन-से काम हैं जिनको करने से मैं खुदा के विशेष बन्दों (उपासकों) में शामिल हो सकता हूँ?	105
अनजाने में की गई ग़लती पर क्या मुझे गुनाह होगा?	106
मुझे किन कामों में लोगों से होड़ करनी चाहिए?	106
क्या मुझे खुदा की रहमत से निराश होना चाहिए?	106
कौन-सी चीज़ मुझे खुदा की याद से रोक सकती है?	107
मुझे किस काम में विशेष तौर से सुस्ती न करनी चाहिए?	107
मैं खुदा को याद न करूँ तो क्या होगा?	107
खुदा मुझे कब याद करेगा?	107
मैं ग़लत कामों से कैसे बच सकता हूँ?	107
क्या मैं अपनी पत्नी को महर देने से बच सकता हूँ?	107
मैं खुदा से कैसे दोस्ती कर सकता हूँ?	108
क्या खुदा मुझे देख रहा है?	108
मेरे लिए खुदा से क्षमा माँगने का सबसे उत्तम समय कौन-सा है?	108
नादानी में मुझसे कोई बुरा काम हो जाए तो मैं क्या करूँ?	108
मेरे जीवन में तंगी (विभिन्न चीज़ों में कमी) क्यों होती है?	108
मैं लोगों से कैसा व्यवहार करूँ?	108
मुझे किसके साथ रहना चाहिए?	109
खुदा मेरे इम्तिहान से क्या चाहता है?	109
मेरा इम्तिहान विशेष तौर पर किन चीज़ों में होता है?	109
क्या मुझे स्वयं को नेक कहना चाहिए?	109
दुनिया में मेरा जीवन कैसे अच्छा गुज़र सकता है?	109
क्या मुझे लोगों का मज़ाक़ उड़ाना चाहिए?	110
क्या मैं किसी की ग़ीबत कर सकता हूँ?	110
मुझे किस काम से बचना चाहिए?	110

मुझे गुप्त परामर्श किस काम में करना चाहिए और किस काम में नहीं?	110
क्या कभी मुझे शक भी करना चाहिए?	111
बुरे काम मेरे सामने हों तो मुझे क्या करना चाहिए?	111
मुझे क्या काम करना चाहिए?	111
जब खुदा की बातों का मज़ाक़ बनाया जा रहा हो तो मुझे क्या करना चाहिए?	111
मुझे कैसे नसीहत व बहस करनी चाहिए?	111
मुझे अपने और दूसरों के घर में कैसे प्रवेश करना चाहिए?	112
जब मैं किसी काम को करने का संकल्प करूँ तो मुझे क्या कहना चाहिए?	112
मुझे अपने धन को कैसे खर्च करना चाहिए?	112
जब मैं किसी की सहायता न कर सकूँ तो क्या करूँ?	112
मुझे किसका साथ देना चाहिए और किसका साथ न देना चाहिए?	112
मैं जन्नत कब पा सकता हूँ?	113
लोगों का झगड़ा कैसे निबटाऊँ?	113
समाज में विभिन्न ख़ानदानों के होने को मैं क्या समझूँ?	113
दूसरों की चीज़ों के बारे में मेरा व्यवहार कैसा हो?	114
मुझे किस बात पर खुश होना चाहिए?	114
कुरआन की मेरे लिए क्या हैसियत है?	114
क्या मेरे लिए कुरआन को समझना कठिन है?	114
मेरे दिल में नर्मी कैसे आ सकती है?	114
मुझे नमाज़ क्यों पढ़नी चाहिए?	115
माँगनेवालों से मेरा व्यवहार कैसा हो?	115
जो कुछ मैं खुदा के रास्ते में खर्च करता हूँ उसका क्या होगा?	115
मुझे खुदा के रास्ते में कितना खर्च करना चाहिए?	115
मुझे खुदा के रास्ते में कहाँ खर्च करना चाहिए?	115
क्या आखिरत में मेरे शारीरिक अंगों का भी हिसाब लिया जाएगा?	116
क्या मैं बिना ज्ञान के कार्रवाई कर सकता हूँ?	116
क्या मैं रिश्तत ले सकता हूँ?	116
मुझे किस काम के लिए सिफ़ारिश करनी चाहिए और किस	

काम के लिए नहीं?	116
जुआ और शराब को मैं क्या समझूँ?	116
मुझे किस तरह गवाही देनी चाहिए?	117
मैं अपने कर्जदार से कैसा व्यवहार रखूँ?	117
खुदा का मुझपर सबसे बड़ा एहसान क्या है?	118
अगर मैं सभी पैगम्बरों को न मानूँ तो क्या होगा?	118
वे कौन से काम हैं जिनके करने से मैं मुनाफ़िक् बन सकता हूँ?	118
दीन की बातें बताने में मुझे किस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए?	118
दूसरे धर्मों के माननेवालों के उपास्यों को क्या मुझे बुरा कहना चाहिए?	118
खुदा मेरा साथी कब बनता है?	119
खुदा मेरा सहायक कब बनता है?	119
यतीम (अनाथ) के साथ मेरा व्यवहार कैसा हो?	119
मेरा शत्रु कौन है?	119
क्या मुझे अच्छा या बुरा कोई काम करने की सम्पूर्ण आज़ादी है?	119

## बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दयावान और कृपाशील खुदा के नाम से

## आमुख

### कुरआन

कुरआन एक ऐसी किताब है जो खुदा की ओर से मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए भेजी गई है। पवित्र कुरआन मनुष्य को सत्य-असत्य का अन्तर बताता है। यह मनुष्य को बुराइयों से पाक होने का तरीका बताता है। यह मनुष्य को दुनिया और आखिरत में अमन से रहने का मार्ग बताता है, इत्यादि।

“रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन (पहले-पहल) उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के स्पष्ट प्रमाणों के साथ।” (कुरआन, 2:185)

“ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश और जो कुछ सीनों में (रोग) है, उसके लिए रोगमुक्ति और मोमिनों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है।” (कुरआन, 10:57)

कुरआन किसी एक विशेष वर्ग के लिए नहीं है, बल्कि पूरी मानव-जाति के लिए है :

“यह (कुरआन) तो सारे संसार के लिए बस एक अनुस्मरण है।”

(कुरआन, 12:104)

कुरआन सभी इन्सानों के लिए है, किन्तु इससे केवल उन लोगों को मार्गदर्शन मिल सकता है, जो इसमें विश्वास रखते हैं और यह मानते हैं कि यह उनके रब की ओर से है। ये लोग खुदा से डरनेवाले भी होते हैं :

“यह (कुरआन) लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुंज है और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।”

(कुरआन, 45:20)



कुरआन सम्पूर्ण रूप से सुरक्षित है, क्योंकि इसकी सुरक्षा का दायित्व स्वयं खुदा ने लिया है। कुरआन जैसा नाज़िल (अवतरित) हुआ था वैसा ही आज भी विद्यमान है :

“निस्सन्देह यह अनुस्मरण (कुरआन) हम (अल्लाह) ने अवतरित किया है और निस्संदेह हम स्वयं इसके रक्षक हैं।”

(कुरआन, 15:9)

कुरआन को हर व्यक्ति समझ सकता है। कुरआन का समझना कठिन नहीं, बल्कि बहुत सरल है :

“और हम (खुदा) ने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?”

(कुरआन, 54:17, 22, 32, 40)

कुरआन का विषय मनुष्य है। वह मनुष्य को उसकी सफलता और असफलता के बारे में बताता है। वह मनुष्य के मूल प्रश्नों का उत्तर देता है। जैसे— मनुष्य कहाँ से आया? उसे कहाँ जाना है? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? अगर कोई उद्देश्य है तो उसे प्राप्त करने का मार्ग क्या है? उसका जीना और मरना क्यों है? मृत्यु के बाद क्या होगा? क्या उसका कोई स्रष्टा है? अगर है तो कैसा है और वह मनुष्य से क्या चाहता है? इत्यादि।

“लो हम (खुदा) ने तुम्हारी ओर एक किताब (कुरआन) अवतरित कर दी है, जिसमें तुम्हारे लिए (तुम्हारी वास्तविकता की) याददिहानी है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?”

(कुरआन, 21:10)

कुरआन का उद्देश्य मनुष्य को बुराई व नाकामी के अंधेरे से निकालकर अच्छाई व कामयाबी के उजाले की ओर ले जाना है :

“यह (कुरआन) एक किताब है जिसे हम (खुदा) ने तुम्हारी (मुहम्मद सल्ल० की) ओर अवतरित किया है, ताकि तुम मनुष्यों को अंधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले आओ, उनके रब की अनुमति से प्रभुत्वशाली प्रशंस्य सत्ता, उस खुदा के मार्ग की

ओर जिसका वह सब है जो आकाशों में है और जो कुछ धरती में है...।”  
(कुरआन, 14:1-2)

कुरआन मनुष्य को दुनिया व आखिरत में कामयाबी का रास्ता बताता है। और कामयाबी का वह रास्ता यह है कि मनुष्य खुदा और रसूल का सम्पूर्ण आज्ञापालन करे :

“और जो कोई (व्यक्ति) खुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे, और खुदा से डरे, और उसकी सीमाओं का खयाल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।”  
(कुरआन, 24:52)

कुरआन की शिक्षाओं के अनुसार अच्छे कार्य करके, मनुष्य को इस जीवन और मरने के बाद वाले जीवन में सुख-शांति प्राप्त होती है :

“जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे, उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।” (कुरआन, 16:97)

कुरआन का मिलना मनुष्य के लिए निस्सन्देह एक बड़े सौभाग्य की बात है। क्योंकि कुरआन मनुष्य को मरने के बाद वाले, हमेशा के जीवन में, असफलता से बचने का मार्ग बताता है :

“(ऐ पैगम्बर, मनुष्यों से) कह दो! यह (कुरआन) खुदा के अनुग्रह और उसकी दया से है, अतः इसपर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। यह उन सब चीजों से उत्तम है, जिनको वे इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।”  
(कुरआन, 10:58)

कुरआन सरल अरबी भाषा में अवतरित हुआ है। कुरआन सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए किताबे-हिदायत (The Book of Guidance) है।

कुरआन को दो उद्देश्यों से पढ़ा जाता है। एक खुदा की हिदायत (मार्गदर्शन) को समझने के लिए और दूसरे उसके अनुसार कार्य करने तथा इस्लामी क़ानून बनाने के लिए।

कुरआन को पढ़ने का मुख्य उद्देश्य खुदा के संदेश को समझकर उसपर अमल करना है। इसलिए जो व्यक्ति अरबी भाषा नहीं जानता, वह कुरआन के अनुवाद को पढ़कर उसे समझ सकता है। कुरआन से क़ानून बनाना एक विशेष कार्य है, जिसके लिए अरबी भाषा, कुरआन व हदीस का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। और यह काम एक बड़ा आलिम (विद्वान) ही कर सकता है।

कुरआन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बात यह है कि इंसान अधिक से अधिक कुरआन के सम्पर्क में रहे, ताकि पूरा जीवन उसके अनुसार गुज़ारा जा सके।

प्रस्तुत पुस्तक को लिखने का मुख्य उद्देश्य खुदा के संदेश “कुरआन” के महत्व को बताना है। कुरआन मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पहलू में रहनुमाई करता है। कुरआन का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है। कुरआन को सिर्फ़ पढ़ लेना और उसे समझकर उसपर अमल करने की कोशिश न करना, वास्तव में कुरआन की नाक़द्री है।

इस किताब में कुरआन से सम्बन्धित मनुष्य के सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं पेश किए गए हैं, केवल नमूने के कुछ ही प्रश्नों को लिखा गया है, ताकि एक झलक मिल सके और इसी प्रकार जीवन के बारे में दूसरे प्रश्नों के उत्तर भी मालूम किए जा सकें।

डॉ० सैयद शाहिद अली

रीडर

डिपार्टमेंट ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़

जामिआ मिल्लिया इस्लामिया

नई दिल्ली-25

## मेरा जीवन और कुरआन

### □ मुझपर विभिन्न मुसीबतें क्यों आती हैं?

“जो मुसीबत तुम्हें पहुँची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुँची और बहुत कुछ तो वह (खुदा) माफ़ कर देता है।” (कुरआन, 42:30)

“जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह खुदा के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। खुदा किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 57:22-23)

“कह दो : हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता सिवाय उसके जो खुदा ने लिख दिया है। वही हमारा स्वामी है। और ईमानवालों को खुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।” (कुरआन, 9:51)

### □ मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मुझे क्या सोचना और कहना चाहिए?

“जो लोग उस समय, जबकि उनपर कोई मुसीबत आती है, कहते हैं : ‘निस्संदेह हम खुदा ही के हैं और हम उसी की ओर लौटनेवाले हैं’। यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी; और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं।” (कुरआन, 2:156)

### □ मुझपर जब कोई मुसीबत आती है, क्या वह मेरी बर्दाश्त से अधिक होती है?

“खुदा किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है।” (कुरआन, 2:286)

### ❑ मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मैं क्या करूँ?

“नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पड़े उसपर धैर्य से काम ले। निस्संदेह ये उन कामों में से हैं जो अनिवार्य और दृढ़ संकल्प के काम हैं।” (कुरआन, 31:17)

### ❑ मुझे मुसीबत में क्या दुआ माँगनी चाहिए?

“हमारे रब! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रब! और हमपर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रब! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें (अपनी कृपाओं से) ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इनकार करनेवालों के मुक्ताबले में हमारी सहायता कर।” (कुरआन, 2:286)

### ❑ मैं मुसीबत में खुदा से किस चीज़ के साथ मदद माँगूँ?

“धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्संदेह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जो डरनेवाले हैं।” (कुरआन, 2:45)

“ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्संदेह खुदा उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।”

(कुरआन, 2:153)

### ❑ मुझे आराम और तकलीफ़ कब पहुँचती है?

“वास्तव में तुम्हारे प्रयास विभिन्न प्रकार के हैं। तो जिस किसी ने (ईश मार्ग में) धन दिया और (खुदा की अवज्ञा से) परहेज़ किया, और अच्छी चीज़ की पुष्टि की, हम उसे सहज मार्ग के लिए सुविधा देंगे। रहा वह व्यक्ति जिसने कंजूसी की और (खुदा से) बेपरवाही बरती और अच्छी चीज़ (सत्य) को झुठला दिया हम उसे कठिन मार्ग के लिए सुविधा देंगे।”

(कुरआन, 92:4-10)

### ❑ वे कौन-से काम हैं जिनको करने से खुदा मुझे नापसन्द करता है?

“...खुदा ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता, जो इतराता और डींगें

मारता है।” (कुरआन, 4:36)

“और लोगों से अपना रुख न फेर और न धरती में इतरा कर चल। निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 31:18)

“...खुदा बिगाड़ फैलानेवालों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 5:64)

“निस्संदेह खुदा ज़्यादाती व अत्याचार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 2:190)

“निश्चय ही वह (सत्य का) इनकार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 30:45)

“निस्संदेह खुदा किसी विश्वासघाती, अकृतज्ञ को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 22:38)

“तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। खुदा किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 57:23)

“बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला खुदा के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 42:40)

“और तुम उन लोगों की ओर से न झगड़ो जो स्वयं अपनों के साथ विश्वासघात करते हैं। खुदा को ऐसा व्यक्ति प्रिय नहीं है जो विश्वासघाती, हक़ मारनेवाला हो।” (कुरआन, 4:107)

“अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो। निश्चय ही वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 7:55)

“ऐ ईमानवालो! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उन्हें हaram न कर लो और हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही खुदा को वे लोग प्रिय नहीं हैं जो हद से आगे बढ़ते हैं।” (कुरआन, 5:87)

“और यदि तुम्हें किसी क्रौम से विश्वासघात की आशंका हो, तो तुम भी उसी प्रकार ऐसे लोगों के साथ हुई संधि को खुल्लम-खुल्ला उनके आगे फेंक दो। निश्चय ही खुदा को विश्वासघात करनेवाले पसन्द नहीं।”

(कुरआन, 8:58)

“जब उससे (क्रारून से) उसकी क्रौम के लोगों ने कहा : इतरा मत, खुदा इतरानेवालों को पसन्द नहीं करता।... और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही खुदा बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।”

(कुरआन, 28:76-77)

“रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें वह उनका पूरा-पूरा बदला देगा। खुदा अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।”

(कुरआन, 3:57)

“खुदा ब्याज को घटाता और मिटाता है और सदक़ों को बढ़ाता है। और खुदा किसी अकृतज्ञ, हक़ मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।”

(कुरआन, 2:276)

“अत्याचारी खुदा को प्रिय नहीं।”

(कुरआन, 3:140)

“खुदा ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो। निश्चय ही वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।” (कुरआन, 6:142)

“निश्चय ही खुदा भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। उसे ऐसे लोग प्रिय नहीं, जो अपने आपको बड़ा समझते हों।”

(कुरआन, 16:23)

□ वे कौन-से काम हैं जिनको करने से खुदा मुझे पसन्द करता है?

“और खुदा के मार्ग में खर्च करो और अपने ही हाथों से अपने-आपको तबाही में न डालो, और अच्छे से अच्छा तरीका अपनाओ। निस्सन्देह खुदा अच्छे से अच्छा काम करनेवालों को पसन्द करता है।”

(कुरआन, 2:195)

“निश्चय ही खुदा को वे लोग प्रिय हैं जो उत्तमकर्म हैं।”

(कुरआन, 5:13)

“ निस्सन्देह खुदा बहुत तौबा करनेवालों को पसन्द करता है और वह उन्हें पसन्द करता है जो स्वच्छता को पसन्द करते हैं।”

(कुरआन, 2:222)

“मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो खुदा पर भरोसा करो। निस्सन्देह खुदा को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।”

(कुरआन, 3:159)

“यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज्यादाती करे, तो जो गिरोह ज्यादाती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ कि वह खुदा के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, और इनसाफ़ करो। निश्चय ही खुदा इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।”

(कुरआन, 49:9)

“यदि फ़ैसला करो तो उनके बीच इनसाफ़ के साथ फ़ैसला करो। निश्चय ही खुदा इनसाफ़ करनेवालों से प्रेम करता है।”

(कुरआन, 5:42)

“सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने संधि-समझौते किए, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ अपने वचन को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो उनके साथ उनकी संधि को उन लोगों के निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही खुदा को डर रखनेवाले प्रिय हैं।”

(कुरआन, 9:4)

“कितने ही नबी ऐसे गुजरे हैं जिनके साथ होकर बहुत-से ईशभक्तों ने युद्ध किया, तो खुदा के मार्ग में जो मुसीबत उन्हें पहुँची उससे वे न तो हताश हुए और न उन्होंने कोई कमज़ोरी दिखाई और न ऐसा हुआ कि वे दबे हों। और खुदा दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवालों से प्रेम करता है।”

(कुरआन, 3:146)

“वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और खुदा को



भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।” (कुरआन, 3:134)

“...वह मस्जिद जिसकी आधारशिला पहले दिन ही से ईशपरायणता पर रखी गई है, वह इसकी ज्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग पाए जाते हैं, जो अच्छी तरह स्वच्छ रहना पसन्द करते हैं, और खुदा भी पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।” (कुरआन, 9:108)

“क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और डर रखेगा, तो खुदा भी डर रखनेवालों से प्रेम करता है।” (कुरआन, 3:76)

“अतः खुदा ने उन्हें दुनिया का भी बदला दिया और आखिरत का अच्छा बदला भी। और सत्कर्मों लोगों से खुदा प्रेम करता है।”

(कुरआन, 3:148)

□ क्या खुदा मेरा इम्तिहान लेता है?

“और हम (खुदा) अवश्य ही कुछ भय से, और कुछ भूख से और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारा इम्तिहान लेंगे। और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो।” (कुरआन, 2:155)

“जिसने निश्चित किया मृत्यु और जीवन ताकि तुम्हारी परीक्षा करें कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।”

(कुरआन, 67:2)

□ मुझे अपने जीवन में कितना कष्ट पहुँचता है?

“किसी पर बस उसकी अपनी समाई भर ही ज़िम्मेदारी है।”

(कुरआन, 2:233)

□ मैं मनोरथ को कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

“और जो कोई खुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे और खुदा से डरे और उसकी सीमाओं का खयाल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।”

(कुरआन, 24:52)

“सफल हो गया वह जिसने अपने आप को निखार लिया, और अपने रब के नाम का स्मरण किया, अतः नमाज़ अदा की।”

(कुरआन, 87:14-15)

“सफल हो गया वह जिसने उसे (अर्थात् अपनी आत्मा और व्यक्तित्व को) विकसित किया। और असफल हुआ वह जिसने उसे दबा दिया।”

(कुरआन, 91:9-10)

□ मुझे लोगों से कैसा व्यवहार रखना चाहिए?

“किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।”

(कुरआन, 42:43)

“क्षमा की नीति अपनाओ और भलाई का हुक्म देते रहो।”

(कुरआन, 7:199)

“हमने तो आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है, सोद्देश्य पैदा किया है, और वह क्रियामत की घड़ी तो अनिवार्यतः आनेवाली है। अतः तुम भली प्रकार दरगुजर (क्षमा) से काम लो।” (कुरआन, 15:85)

“(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो खुदा की ओर से बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म हो रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो सब तुम्हारे पास से छूट जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो।”

(कुरआन, 3:159)

“बहुत-से किताबवाले अपने भीतर की ईर्ष्या से चाहते हैं कि किसी प्रकार वे तुम्हारे ईमान लाने के बाद फेरकर तुम्हें इंकार कर देनेवाला बना दें, यद्यपि सत्य उनपर प्रकट हो चुका है, तो तुम दरगुजर (क्षमा) से काम लो और जाने दो यहाँ तक कि खुदा अपना फ़ैसला लागू कर दे। निस्संदेह खुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

(कुरआन, 2:109)

“न उनके आचरण परस्पर समान होते हैं और न बुरे आचरण। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, (ऐसा हो जाएगा) जैसे वह घनिष्ठ मित्र है। किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम लेते हैं, और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त

होती है जो बड़ा भाग्यशाली होता है।” (कुरआन, 41:34-35)

□ क्या मैं वह कह सकता हूँ, जो मैं न करूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं? खुदा के यहाँ यह अत्यन्त अप्रिय बात है कि तुम वह बात कहो, जो करो नहीं।” (कुरआन, 61:2-3)

“क्या तुम लोगों को तो नेकी और भलाई का उपदेश देते हो और अपने आपको भूल जाते हो, हालाँकि तुम किताब भी पढ़ते हो? फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?” (कुरआन, 2:44)

□ मेरी बातचीत कैसी होनी चाहिए?

“मेरे बन्दों से कह दो कि : बात वही कहें जो उत्तम हो। शैतान तो उनके बीच उकसाकर फ़साद डालता रहता है। निस्सन्देह शैतान मनुष्य का प्रत्यक्ष शत्रु है।” (कुरआन, 17:53)

“और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तो तुम फिर गए, बस तुममें बचे थोड़े ही, और तुम उपेक्षा की नीति ही अपनाए रहे।” (कुरआन, 2:83)

“और अपने माल, जिसे खुदा ने तुम्हारे लिए जीवनयापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।” (कुरआन, 4:5)

“तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए।”

(कुरआन, 104:1)

“और अपनी चाल में सहजता एवं सन्तुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ धीमी रख। निस्सन्देह आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की होती है।” (कुरआन, 31:19)

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो और बात कहो ठीक सधी हुई। वह तुम्हारे कर्मों को सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।” (कुरआन, 33:70-71)

“दयावान प्रभु के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर विनम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं: तुमको सलाम!”  
(कुरआन, 25:63)

### □ मेरी चाल कैसी होनी चाहिए?

“दयावान प्रभु के (प्रिय बन्दे वही हैं जो धरती पर विनम्रतापूर्वक चलते हैं।”  
(कुरआन, 25:63)

“और धरती में अकड़ कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो। इनमें से प्रत्येक की बुराई तुम्हारे रब की दृष्टि में अप्रिय ही है।”  
(कुरआन, 17:37-38)

“और लोगों से अपना रुख न फेर और न धरती में इतरा कर चल। निश्चय ही खुदा किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता। और अपनी चाल में सहजता एवं सन्तुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ धीमी रख।”  
(कुरआन, 31:18-19)

### □ मेरा खान-पान कैसा होना चाहिए?

“ऐ आदम की सन्तान! इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपनी शोभा धारण करो, खाओ और पियो, परन्तु हृद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही, वह (खुदा) हृद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 7:31)

### □ मैं सीधे रास्ते पर कैसे जमा रह सकता हूँ?

“जो कोई खुदा को मज़बूती से पकड़ ले, वह सीधे मार्ग पर आ गया। ऐ ईमनावालो! खुदा का डर रखो, जैसा कि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो। और सब मिलकर खुदा की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो।”  
(कुरआन, 3:101-103)

### □ मुझे मरते समय कैसा होना चाहिए?

“ऐ ईमनावालो! खुदा का डर रखो, जैसा कि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी)

हो।”

(कुरआन, 3:102)

### ❑ मुझे किस रास्ते पर चलना चाहिए?

“और यह (इस्लाम) तुम्हारे रब का रास्ता है, बिल्कुल सीधा।”

(कुरआन, 6:126)

### ❑ वह कौन-सा काम है जिसे करने से खुदा मुझे याद रखता है?

“अतः तुम मुझे (खुदा को) याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।”

(कुरआन, 2:152)

### ❑ मुझे किसका आदेश मानना चाहिए?

“खुदा का डर रखो और आपस के सम्बन्धों को ठीक रखो। और खुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो।”

(कुरआन, 8:1)

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुम में अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए तो उसे तुम खुदा और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम खुदा और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।”

(कुरआन, 4:59)

### ❑ मुझे कौन-से साहसवाले काम करने चाहिए?

“नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पड़े उसपर धैर्य से काम ले। निस्सन्देह ये उन कामों में से है जो अनिवार्य और दृढ़संकल्प के काम हैं।”

(कुरआन, 31:17)

“धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्सन्देह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिनके दिल पिघले हुए हों।”

(कुरआन, 2:45)

“तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी और

तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें तुमसे पहले किताब प्रदान की गई थी और उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया, बहुत-सी कष्टप्रद बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु यदि तुम जमे रहे और डर खा, तो यह उन कर्मों में से है जो आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।”

(कुरआन, 3:186)

□ मुझे अपने पूर्वजों का अनुसरण कब नहीं करना चाहिए?

“और जब उनसे कहा जाता है : खुदा ने जो कुछ उतारा है उसका अनुसरण करो, तो कहते हैं : नहीं, बल्कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया। क्या उस दशा में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी बुद्धि से काम न लेते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों?”

(कुरआन, 2:170)

“और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो खुदा ने अवतरित की है और रसूल की ओर, तो वे कहते हैं : हमारे लिए तो वही काफ़ी है जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या यद्यपि उनके बाप-दादा कुछ भी न जानते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों?”

(कुरआन, 47:21)

“जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरति हुआ है, उसपर चलो और उसे छोड़कर दूसरे संरक्षक मित्रों का अनुसरण न करो। तुम लोग नसीहत थोड़े ही मानते हो।”

(कुरआन, 7:3)

□ वे कौन-से काम हैं जिनको करने से मुझे जन्नत मिल सकती है?

“और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और खुदा को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं। और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर जुल्म करते हैं, तो तत्काल खुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा

चाहने लगते हैं—और खुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहीं बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।”

(कुरआन, 3:133-136)

“जो लोग खुदा के साथ की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और अभिवचन को तोड़ते नहीं, और जो ऐसे हैं कि खुदा ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है। और जिन लोगों ने अपने रब की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छिपे खर्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आखिरत के घर का अच्छा परिणाम है, अर्थात् सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियाँ और उनकी सन्तानों में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास सलाम पहुँचाएँगे। (वे कहेंगे): तुमपर सलाम (सुख-शान्ति) है उसके बदले में जो तुमने धैर्य से काम लिया। अतः क्या ही अच्छा परिणाम है आखिरत के घर का।”

(कुरआन, 13:20-24)

“और जो कोई उसके (खुदा के) पास मोमिन होकर आया और जिसने अच्छे कर्म किए होंगे तो ऐसे लोगों के लिए तो ऊँचे दर्जे हैं। अदन के बाग़ हैं जिनके नीचे नहीं बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। यह बदला है उसका जिसने स्वयं को विकसित किया।”

(कुरआन, 20:75-76)

“जिन लोगों ने भलाई की उनकी इस दुनिया में भी अच्छी हालत है और आखिरत का घर तो अच्छा है ही और क्या ही अच्छा घर है डर रखनेवालों का ! — सदैव रहने के बाग़ जिनमें वे प्रवेश करेंगे, उनके नीचे नहीं बह रही होंगी, उनके लिए वहाँ वह सब कुछ संचित होगा, जो वे चाहें। खुदा डर रखनेवालों को ऐसा ही प्रतिदान प्रदान करता है।”

(कुरआन, 16:30-31)

“यह (कुरआन) एक अनुस्मृति है। और निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए अच्छा ठिकाना है। सदैव रहने के बाएँ हैं जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे। उनमें वे तकिया लगाए हुए होंगे वहाँ वे बहुत-से मेवे और पेय मँगवाते होंगे।”  
(कुरआन, 38:49-51)

□ खुदा मुझे किन बातों के करने का आदेश नहीं देता?

“और उनका हाल यह है कि जब वे लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं कि : हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीके पर पाया है और खुदा ही ने हमें इसका आदेश दिया है। कह दो : खुदा कभी अश्लील बातों का आदेश नहीं दिया करता। क्या खुदा पर थोपकर ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं।”  
(कुरआन, 7:28)

□ मुझे किसपर भरोसा करना चाहिए?

“और ईमानवालों को तो खुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।”

(कुरआन, 3:122)

□ मुझे किससे नहीं डरना चाहिए?

“वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।” (कुरआन, 3:175)

□ खुदा मुझसे कैसा व्यवहार चाहता है?

“और याद करो जब इसराईल की सन्तान से हमने वचन लिया : खुदा के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करोगे, और माँ-बाप के साथ और नातेदारों के साथ और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे, और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।”  
(कुरआन, 2:83)

□ खुदा मुझे कब सही रास्ता (मार्गदर्शन) नहीं दिखाता?

“खुदा उन लोगों को कैसे मार्ग दिखाएगा, जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात् अंधधर्म और इनकार की नीति अपनाई, जबकि वे स्वयं इस बात की गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास स्पष्ट निशानियाँ भी



आ चुकी हैं? खुदा अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाया करता।”

(कुरआन, 3:86)

“और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : ‘ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों दुख देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ खुदा का रसूल हूँ।’ फिर जब उन्होंने टेढ़ा अपनाई तो खुदा ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिए। खुदा अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।”

(कुरआन, 61:5)

“क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम (काबा) के प्रबंध को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है, जो खुदा और अंतिम दिन पर ईमान लाया और उसने खुदा के मार्ग में संघर्ष किया? अल्लाह की दृष्टि में वे बराबर नहीं। और खुदा अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।”

(कुरआन, 9:19)

“(आदर के महीनों का) हटाना तो बस कुफ़्र में एक वृद्धि है, जिससे इंकार करनेवाले गुमराही में पड़ते हैं। किसी वर्ष वे उसे हलाल (वैध) ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उसको हराम ठहरा लेते हैं, ताकि खुदा के आदृत (महीनों) की संख्या पूरी कर लें, और इस प्रकार खुदा के हराम किए हुए को वैध ठहरा लें। उनके अपने बुरे कर्म उनके लिए सुहावने हो गए हैं और खुदा इंकार करनेवाले लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।” (कुरआन, 9:37)

“जान रखो कि विशुद्ध धर्म खुदा ही के लिए है। रहे वे लोग जिन्होंने उससे हटकर दूसरे समर्थक और संरक्षक बना रखे हैं (कहते हैं :) ‘हम तो उनकी बन्दगी इसी लिए करते हैं कि वे हमें खुदा का सामीप्य प्राप्त करा दें।’ निश्चय ही खुदा उनके बीच इस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। खुदा उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और बड़ा अकृतज्ञ हो।”

(कुरआन, 39:3)

“फ़िरऔन के लोगों में से एक व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपा रहा था, कहा : ‘क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे कि वह

कहता है कि मेरा रब खुदा है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है? यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा। किन्तु यदि वह सच्चा है तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उससे कुछ न कुछ तो तुमपर पड़कर रहेगा। निश्चय ही खुदा उसको मार्ग नहीं दिखाता तो मर्यादाहीन, बड़ा झूठा हो।” (कुरआन, 40:28)

### □ मुझे किन बातों पर ईमान रखना चाहिए?

“रसूल उसपर, जो कुछ उसके रब की ओर से उसकी ओर उतरा, ईमान लाया और ईमानवाले भी, प्रत्येक, खुदा पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (और उनका कहना यह है): ‘हम उसके रसूलों में से किसी को दूसरे रसूलों से अलग नहीं करते।’ और उसका कहना है : ‘हमने सुना और आज्ञाकारी हुए। हमारे रब! हम तेरी क्षमा के इच्छुक हैं और तेरी ही ओर लौटना है।” (कुरआन, 2:285)

### □ मुझे किस दिन का डर रखना चाहिए?

“और उस दिन का डर रखो जबकि तुम खुदा की ओर लौटोगे, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कदापि कोई अन्याय न होगा।” (कुरआन, 2:281)

### □ मुझे किन बातों में बहस न करनी चाहिए?

“ये तुम लोग हो कि उसके विषय में तो वाद-विवाद कर चुके जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान न था। अब उसके विषय में क्यों वाद-विवाद करते हो, जिसके विषय में तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं? अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते।” (कुरआन, 3:66)

### □ मुझे किन चीज़ों पर सोचना चाहिए?

“जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे खुदा को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं :) हमारे रब तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले।” (कुरआन, 3:191)

“कहो कि : धरती में चलो-फिरो और देखो कि उसने किस प्रकार पैदाइश का आरम्भ किया। फिर खुदा पश्चात्कर्ती उठान उठाएगा। निश्चय ही खुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।” (कुरआन, 29:20)

“कहो : धरती में चल-फिरकर देखो कि झुठलानेवालों का क्या अंजाम हुआ।” (कुरआन, 6:11)

“अतः मनुष्य को चाहिए कि अपने भोजन को देखे।”

(कुरआन, 80:24)

### □ मेरे जीवन और मेरी मृत्यु का उद्देश्य क्या है?

“जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।” (कुरआन, 67:2)

### □ मुझे दुनिया व आखिरत में अच्छा जीवन कैसे मिल सकता है?

“जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।” (कुरआन, 16:97)

### □ मेरा दामन कैसा होना चाहिए?

“अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो।”

(कुरआन, 74:4-5)

### □ दुनिया की चीज़ें क्या मेरे लिए हैं?

“वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की सारी चीज़ें पैदा कीं, फिर आकाश की ओर रुख किया और ठीक तौर पर सात आकाश बनाए और वह हर चीज़ को जानता है।” (कुरआन, 2:29)

“कहो : ‘खुदा की शोभा को जिसे उसने अपने बन्दों के लिए उत्पन्न किया है और आजीविका की पवित्र, अच्छी चीज़ों को जिसने हराम कर दिया?’ कह दो : ‘ये सांसारिक जीवन में भी ईमानवालों के लिए हैं, क्रियामत

के दिन तो ये केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए सविस्तार बयान करते हैं, जो जानना चाहें।”

(कुरआन, 7:32)

□ मुझे अपना धन किसे न देना चाहिए?

“और अपने माल, जिसे खुदा ने तुम्हारे लिए जीवन-यापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।”

(कुरआन, 4:5)

□ मैं किसी अच्छे काम का आरम्भ करता हूँ किन्तु कामयाब नहीं हो पाता, तो क्या मुझे अपने इस प्रयास का बदला मिलेगा?

“मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया, और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही देखा जाएगा। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा।”

(कुरआन, 53:39-41)

□ मुझे किस बात पर हमेशा जमे रहना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा के लिए गवाही देते हुए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) खुदा को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का सम्बन्ध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो खुदा को उसकी खबर रहेगी।”

(कुरआन, 4:135)

□ मैं अपने लेन-देन के मामलात कैसे करूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! जब किसी निश्चित अवधि के लिए आपस में ऋण (कर्ज़) का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि कोई लिखनेवाला तुम्हारे बीच न्यायपूर्वक (दस्तावेज़) लिख दे। और लिखनेवाला लिखने से इंकार न करे, जिस प्रकार खुदा ने उसे सिखाया है उसी प्रकार वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए और बोलकर वह लिखाए जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो। और उसे खुदा का, जो उसका रब है, डर रखना

चाहिए और उसमें कोई कमी न करनी चाहिए। फिर यदि वह व्यक्ति जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो, कम समझ या कमज़ोर हो, या वह बोलकर न लिखा सकता हो तो उसके संरक्षक को चाहिए कि न्यायपूर्वक बोलकर लिखा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों को गवाह बना लो और यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिन्हें तुम गवाह के लिए पसन्द करो, गवाह हो जाएँ। (दो स्त्रियाँ इसलिए रखी गई हैं) ताकि यदि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। और गवाहों को जब बुलाया जाए तो आने से इंकार न करें। मामला चाहे छोटा हो या बड़ा एक निर्धारित अवधि तक के लिए है, तो उसे लिखने में सुस्ती से काम न लो। यह खुदा की दृष्टि में अधिक न्यायसंगत बात है और इससे गवाही भी अधिक ठीक रहती है। और इससे अधिक संभावना है कि तुम किसी संदेह में नहीं पड़ोगे। हाँ, यदि कोई सौदा नक़्द हो, जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो, तो तुम्हारे उसके न लिखने में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और जब आपस में क्रय-विक्रय का मामला करो तो उस समय भी गवाह कर लिया करो, और न किसी लिखनेवाले को हानि पहुँचाई जाए और न किसी गवाह को। और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए अवज्ञा की बात होगी। और खुदा का डर रखो। खुदा तुम्हें शिक्षा दे रहा है। और खुदा हर चीज़ को जानता है। और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिसपर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और खुदा का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो खुदा उसे भली-भाँति जानता है।” (कुरआन, 2:282-283)

□ मुझे किन लोगों से दोस्ती करनी चाहिए?

“तुम्हारे मित्र तो केवल खुदा और उसका रसूल और वे ईमानवाले हैं जो विनम्रता के साथ नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं। अब जो कोई खुदा और उसके रसूल और ईमानवालों को अपना मित्र बनाए, तो निश्चय

ही खुदा का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा।” (कुरआन, 5:55-56)

### □ मुझे किन लोगों से दूर रहना चाहिए?

“छोड़ो उन लोगों को जिन्होंने अपने धर्म को खेल और तमाशा बना लिया है और उन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा है। और इसके द्वारा उन्हें नसीहत करते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि कोई अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ जाए। खुदा से हटकर कोई भी नहीं, जो उसका समर्थक और सिफ़ारिश करनेवाला हो सके और यदि वह छुटकारा पाने के लिए बदले के रूप में हर संभव चीज़ देने लगे, तो भी वह उससे न ली जाए। ऐसे ही लोग हैं, जो अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ गए। उनके लिए पीने को ख़ौलता हुआ पानी है और दुखद यातना भी, क्योंकि वे इंकार करते रहे हैं।”

(कुरआन, 6:70)

### □ मैं किसके साथ अच्छा व्यवहार करूँ?

“खुदा की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।”

(कुरआन, 4:36)

### □ मैं सही मार्ग पानेवाले लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ?

“खुदा की मस्जिदों का प्रबन्धक और उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो खुदा और अंतिम दिन पर ईमान लाया, नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और खुदा के सिवा किसी से न डरा। अतः ऐसे लोग, आशा है कि सीधा मार्ग पानेवाले होंगे।”

(कुरआन, 9:18)

### □ खुदा मेरी परीक्षा कैसे लेता है?

“किन्तु मनुष्य का हाल यह है कि जब उसका रब इस प्रकार उसकी परीक्षा करता है कि उसे प्रतिष्ठा और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है:

‘मेरे रब ने मुझे प्रतिष्ठित किया।’ किन्तु जब कभी वह उसकी परीक्षा इस प्रकार करता है कि उसकी रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो वह कहता है : ‘मेरे रब ने मेरा अपमान किया।’ (कुरआन, 89:15-16)

### ❑ मुझे पर खुदा की दया कब होगी?

“और उस आग से बचो जो इंकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है। और खुदा और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए।” (कुरआन, 3:131-132)

### ❑ मुझे डर और दुख कब नहीं होगा?

“निस्सन्देह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है, और उन्हें न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।” (कुरआन, 2:277)

### ❑ खुदा से डरनेवाला बनने पर मुझे क्या मिलेगा?

“कहो : ‘क्या मैं तुम्हें इससे उत्तम चीज़ का पता दूँ।’ जो लोग खुदा का डर रखेंगे उनके लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। वहाँ पाक-साफ़ जोड़े होंगे और खुदा की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और खुदा अपने बन्दों पर नज़र रखता है।” (कुरआन, 3:15)

### ❑ खुदा का प्रिय बन्दा बनने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

“ये लोग धैर्य से काम लेनेवाले, सत्यवान और अत्यन्त आज्ञाकारी हैं, ये (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते और रात की अंतिम घड़ियों में क्षमा की प्रार्थनाएँ करते हैं।” (कुरआन, 3:17)

### ❑ मुझे किससे डरना चाहिए?

“जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने मौजूद पाएगा, वह कामना करेगा कि काश! उसके और उस दिन के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता। और खुदा तुम्हें अपना भय दिलाता

है, और वह अपने बन्दों के लिए अत्यन्त करुणामय है।”

(कुरआन, 3:30)

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो, जैसाकि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम (खुदा के) आज्ञाकारी हो।”

(कुरआन, 3:102)

□ मैं खुदा से मुहब्बत कैसे कर सकता हूँ?

“(ऐ पैग़म्बर) कह दो : यदि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, खुदा भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। खुदा बड़ा क्षमाशील और दयावान् है।”

(कुरआन, 3:31)

□ क्या मुझे विभिन्न पैग़म्बरों की शिक्षाओं में अन्तर करना चाहिए?

“कहो : हम तो खुदा पर और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हम पर उतरी है, और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान पर उतरी उसपर भी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान हुई (उसपर भी हम ईमान रखते हैं)। हम उनमें से किसी को उस सम्बन्ध से अलग नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।”

(कुरआन, 3:84)

□ क्या मुझे विभिन्न पैग़म्बरों में अन्तर करना चाहिए?

“कहो : हम ईमान लाए खुदा पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली, और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं।”

(कुरआन, 2:136)

□ खुदा मेरी तौबा कब स्वीकार नहीं करता?

“रहे वे लोग जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात् इंकार किया और अपने इंकार में बढ़ते ही चले गए, उनकी तौबा कदापि स्वीकार न होगी। वास्तव में



वही पथभ्रष्ट हैं।”

(कुरआन, 3:90)

□ मैं खुदा को कब याद करूँ?

“जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं :) हमारे रब, तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले।”

(कुरआन, 3:191)

□ खुदा मुझे किन कामों के करने का आदेश देता है?

“अतः तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।” (कुरआन, 2:152)

“फिर क्या वे खुदा की ओर नहीं पलटेंगे और उससे क्षमा याचना नहीं करेंगे, जबकि खुदा बड़ा क्षमाशील, दयावान है।” (कुरआन, 5:74)

“और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने शृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उनमें खुला रहता है। और अपने सीनों पर अपने दुपट्टे डाले रहें और अपना शृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पतियों के या अपने बापों के या अपने पतियों के बापों के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के या अपने भाँजों के या अपने मेल-जोल की स्त्रियों के या जो उनकी अपनी मिलकियत में हों उनके, या उन अधीनस्थ पुरुषों के जो उस अवस्था को पार कर चुके हों जिसमें स्त्री की ज़रूरत होती है, या उन बच्चों के जो स्त्रियों के परदे की बातों से परिचित न हों। और स्त्रियाँ अपने पाँव धरती पर मारकर न चलें कि अपना जो शृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमानवालो! तुम सब मिलकर खुदा से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।”

(कुरआन, 24:31)

“निश्चय ही खुदा न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।” (कुरआन, 16:90)

“खुदा तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हकदारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फैसला करो, तो न्यायपूर्वक फैसला करो। खुदा तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्सन्देह, खुदा सब कुछ सुनता, देखता है।” (कुरआन, 4:58)

“ऐ ईमानवालो! खुदा के लिए गवाही देते हुए इंसान पर मजबूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) खुदा को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो खुदा को उसकी खबर है।” (कुरआन, 4:135)

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा के लिए खूब उठनेवाले, इंसान की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इंसान करना छोड़ दो। इंसान करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। खुदा का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो खुदा को उसकी खबर है।” (कुरआन, 5:8)

“ऐ ईमान लानेवालो! जानते-बूझते तुम खुदा और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करना और न अपनी अमानतों में खियानत करना।” (कुरआन, 8:27)

“और धरती में उसके सुधार के पश्चात् बिगाड़ न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही, खुदा की दयालुता सत्कर्मियों लोगों के निकट है।” (कुरआन, 7:56)

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है: ‘खुदा के मार्ग में निकलो’ तो तुम धरती में ढहे जाते हो? क्या तुम आखिरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गए? सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री तो आखिरत के हिसाब में है कुछ थोड़ी ही!” (कुरआन, 9:38)

“कह दो : मेरे रब ने तो न्याय का आदेश दिया है और यह कि इबादत

के प्रत्येक अवसर पर अपना रुख ठीक रखो और निरे उसी के भक्त एवं आज्ञाकारी बनकर उसे पुकारो। जैसे उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।” (कुरआन, 7:29)

### □ मेरे लिए क्या खाना जाइज़ है?

“(ऐ पैग़म्बर!) वे तुमसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल है? कह दो : तुम्हारे लिए सारी अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवर के रूप में सधा रखा हो—जिनको जैसा खुदा ने तुम्हें सिखाया है, सिखाते हो—वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़े रखें, उसको खाओ और उसपर खुदा का नाम लो। और खुदा का डर रखो। निश्चय ही खुदा जल्द हिसाब लेनेवाला है।” (कुरआन, 5:4)

### □ मेरे लिए क्या खाना नाजाइज़ है?

“उसने तो केवल तुमपर मुर्दार और खून और सूअर का मांस और जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। इसपर भी जो बहुत मजबूर और विवश हो जाए, वह अवज्ञा करनेवाला न हो और सीमा से आगे बढ़नेवाला हो तो उसपर कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह क्षमाशील, दयावान है।” (कुरआन, 3:29)

### □ क्या खुदा मेरी हर बात को जानता है?

“कह दो : यदि तुम अपने दिलों की बात छिपाओ या उसे प्रकट करो, प्रत्येक दशा में खुदा उसे जान लेगा। और वह उसे भी जानता है, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और खुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।” (कुरआन, 3:29)

### □ मुझे कैसे (धन, ज्ञान, इज़्ज़त आदि) सुख प्राप्त हो सकता है?

“और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया।” (कुरआन, 53:39)

### □ मेरे लिए बड़ी नेमत या दौलत क्या है?

“वह जिसे चाहता है तत्त्वदर्शिता प्रदान करता है और जिसे तत्त्वदर्शिता प्राप्त हुई उसे बड़ी दौलत मिल गई। किन्तु चेतते वही हैं जो बुद्धि और

समझवाले हैं।”

(कुरआन, 2:269)

### □ मुझे किस बात की तमन्ना न करनी चाहिए?

“और उसकी कामना न करो, जिसमें खुदा ने तुममें किसी को किसी से उच्च रखा है। पुरुषों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है। खुदा से उसका उदार दान चाहो। निस्संदेह खुदा को हर चीज़ का ज्ञान है।”

(कुरआन, 4:32)

### □ मुझे सबसे अधिक किस बात से बचना चाहिए?

“याद करो जब लुक्मान ने अपने बेटे से, उसे नसीहत करते हुए कहा: ऐ मेरे बेटे! खुदा का साझी न ठहराना। निश्चय ही शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा जुल्म है।”

(कुरआन, 31:13)

“ऐ ईमान लानेवालो! बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का माँस खाए? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही।— और खुदा का डर रखो। निश्चय ही खुदा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।”

(कुरआन, 49:12)

### □ मैं अपने माता-पिता से कैसा व्यवहार रखूँ?

“तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें ‘उँह’ तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टतापूर्वक बात करो। और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाए रखो और कहो : मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।”

(कुरआन, 17:23-24)

“खुदा की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ

और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनार्थों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्जे में हों। खुदा ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।” (कुरआन, 4:36)

“और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ-बाप के मामले में ताकीद की है—उसकी माँ ने निढाल पर निढाल होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे—कि ‘मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ-बाप के प्रति भी। अंततः मेरी ही ओर आना है।’” (कुरआन, 31:14)

□ मैं अपने माता-पिता का किस बात में आज्ञापालन न करूँ?

“और हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है। किन्तु यदि वे तुझपर ज़ोर डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही ओर तुम सबको पलटकर आना है; फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।” (कुरआन, 29:8)

“किन्तु यदि वे (माँ-बाप) तुझपर दबाव डालें कि तू किसी को मेरे साथ साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ भले तरीक़े से रहना। किन्तु अनुसरण उस व्यक्ति के मार्ग का करना जो मेरी ओर रुजू हो। फिर तुम सबको मेरी ही ओर पलटना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।” (कुरआन, 31:15)

□ खुदा की दृष्टि में मैं अत्याचारी कब बन जाता हूँ?

“ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई ग़िरोह दूसरे पुरुषों की हंसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हंसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात् अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति अत्याचारी हैं।” (कुरआन, 49:11)

“जो उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे खुदा ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।” (कुरआन, 5:45)

□ जब मुझे किसी ग़लत आदमी से कोई ख़बर मिले तो मुझे क्या करना चाहिए?

“ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यदि कोई दुराचारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी ग़िरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।” (कुरआन, 49:6)

□ खुदा की दृष्टि में, मैं किस आधार पर विभिन्न दर्जे पा सकता हूँ?

“उनमें से प्रत्येक के दर्जे अपने किए हुए कर्मों के अनुसार होंगे (ताकि खुदा का वादा पूरा हो) और ताकि वह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे और उनपर कदापि जुल्म न हो।” (कुरआन, 46:19)

“सभी के दर्जे उनके कर्मों के अनुसार हैं। और जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है।” (कुरआन, 6:132)

□ मैं खुदा की प्रसन्नता कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

“अतः नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी। यह अच्छा है उनके लिए जो खुदा की प्रसन्नता के इच्छुक हों और वही सफल हैं।” (कुरआन, 30:38)

□ जब मैं दुआ माँगता हूँ तो क्या खुदा मेरे निकट होता है?

“और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।” (कुरआन, 2:186)

□ क्या मेरी दुआएँ स्वीकार की जाती हैं?

“तुम्हारे रब ने कहा है कि तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा। जो लोग मेरी बन्दगी के मामले में घमण्ड से काम लेते हैं निश्चय ही

वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे।” (कुरआन, 40:60)

### □ कोई व्यक्ति मुझे दुआ दे तो मैं क्या करूँ?

“और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो। निश्चय ही खुदा हर चीज़ का हिसाब रखता है।” (कुरआन, 4:86)

### □ मुझे खुदा से क्या दुआ माँगनी चाहिए?

“ऐ हमारे रब! हमें इंकार करनेवालों के लिए फ़ितना न बना और ऐ हमारे रब! हमें क्षमा कर दे। निश्चय ही तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।” (कुरआन, 60:5)

“और याद करो जब इबराहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे, (तो उन्होंने प्रार्थना की): ऐ हमारे रब! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले, निश्चय ही तू सुनता जानता है। ऐ हमारे रब, हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना, और हमें हमारे इबादत के तरीके बता और हमारी तौबा क़बूल कर। निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। ऐ हमारे रब! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी अग्यतें सुनाए और उनको किताब और तत्त्वदर्शिता की शिक्षा दे और उन (की आत्मा) को विकसित करे। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।” (कुरआन, 2:127-129)

“और जब वे जालूत और उसकी सेनाओं के मुक़ाबले पर आए तो कहा : ऐ हमारे रब! हमपर धैर्य उण्डेल दे और हमारे क़दम जमा दे और इंकार करनेवाले लोगों पर हमें विजय प्रदान कर।” (कुरआन, 2:250)

“हमारे रब! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रब! और हमपर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रब! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें (अपनी कृपा से) ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इंकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।” (कुरआन, 2:286)

“और उनमें से कोई ऐसा है जो कहता है : हमारे रब! हमें प्रदान कर दुनिया में भी अच्छी दशा और आखिरत में भी अच्छी दशा, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।” (कुरआन, 2:201)

“प्रशंसा खुदा ही के लिए है जो सारे संसार का रब (प्रभु, पालनकर्त्ता) है। बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है। बदला दिए जाने के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। हमें सीधे मार्ग पर चला। उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपापात्र हुए जो न प्रकोप के भागी हुए और न पथभ्रष्ट।” (कुरआन, 1:1-7)

“मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने (माँ-बाप) बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।” (कुरआन, 17:24)

“हमारे रब! जब तू हमें सीधे मार्ग पर लगा चुका है तो इसके पश्चात् हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर और हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर। निश्चय ही तू बड़ा दाता है।” (कुरआन, 3:8)

“उसने (मूसा ने) कहा : मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें अपनी दयालुता में दाखिल कर ले। तू तो सबसे बढ़कर दयावान है।” (कुरआन, 7:151)

“मूसा ने अपनी क्रीम के सत्तर आदमियों को हमारे नियत किए हुए समय के लिए चुना। फिर जब उन लोगों को एक भूकम्प ने आ पकड़ा तो उसने कहा : मेरे रब! यदि तू चाहता तो पहले ही इनको और मुझे विनष्ट कर देता। जो कुछ हमारे नादानों ने किया है, क्या उसके कारण तू हमें विनष्ट करेगा? यह तो बस तेरी ओर से एक परीक्षा है। इसके द्वारा तू जिसे चाहे पथभ्रष्ट कर दे और जिसे चाहे मार्ग दिखा दे। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर, और तू ही सबसे बढ़कर क्षमा करनेवाला है।” (कुरआन, 7:155)

“मेरे रब! तूने मुझे राज्य प्रदान किया और मुझे घटनाओं और बातों के निष्कर्ष तक पहुँचना सिखाया। आकाश और धरती के पैदा करनेवाले! दुनिया और आखिरत में तू ही मेरा संरक्षक मित्र है। तू मुझे इस दशा में उठा कि मैं



(तेरा) आज्ञाकारी हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।”

(कुरआन, 12:101)

“मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना। हमारे रब! और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर। हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन क्षमा कर देना, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा।”

(कुरआन, 14:40-41)

“कहो : ऐ मेरे रब! जिस चीज़ का वादा उनसे किया जा रहा है, वह यदि तू मुझे दिखाए तो मेरे रब! मुझे उन अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना।”

(कुरआन, 23:93-94)

“और कहो : ऐ मेरे रब! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ। और मेरे रब! मैं इससे भी तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।”

(कुरआन, 23:97-98)

“और कहो : मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और दया कर। तू तो सबसे अच्छा दया करनेवाला है।”

(कुरआन, 23:118)

“ऐ हमारे रब! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का नायक बना दे।”

(कुरआन, 25:74)

“ऐ मेरे रब! मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे योग्य लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर। और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर।”

(कुरआन, 26:83-85)

“मेरे रब! मुझे संभाले रख कि मैं तेरी उस कृपा पर कृतज्ञता दिखाता रहूँ जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि अच्छा कर्म करूँ जो तुझे पसन्द आए और अपनी दयालुता से मुझे अपने अच्छे बन्दों में दाखिल कर।”

(कुरआन, 27:19)

“और अय्यूब पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि उसने अपने रब को

पुकारा कि : मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है।” (कुरआन, 21:83)

“अन्त में उसने अपने रब को पुकारा कि : मैं दबा हुआ हूँ। अब तू बदला ले।” (कुरआन, 54:10)

“ऐ हमारे रब! तू हमारे गुनाहों को और हमारे मामले में जो ज्यादाती हो गई हो, उसे क्षमा कर दे, और हमारे क्रदम जमाए रख, और इंकार करनेवाले लोगों के मुक्काबले में हमारी सहायता कर।” (कुरआन, 3:147)

“हमारे रब तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले। हमारे रब! तूने जिसे आग में डाला, उसे रुसवा कर दिया। और ऐसे ज़ालिमों का कोई सहायक न होगा। हमारे रब! हमने एक पुकारनेवाले को ईमान की ओर बुलाते सुना कि ‘अपने रब पर ईमान लाओ।’ तो हम ईमान लाए। हमारे रब! तो अब तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमें नेक और वफ़ादार लोगों के साथ (दुनिया से) उठा। हमारे रब! जिस चीज़ का वादा तूने अपने रसूलों के द्वारा किया वह हमें प्रदान कर और क्रियामत के दिन हमें रुसवा न करना। निस्सन्देह तू अपने वादे के विरुद्ध जानेवाला नहीं है।” (कुरआन, 3:191-194)

“कहो : मैं शरण लेता हूँ प्रकट करनेवाले रब की, जो भी उसने पैदा किया उसकी बुराई से, और अंधेरे की बुराई से जबकि वह घुस आए, और गाँठों में फूँक मारनेवालों (या फूँक मारनेवालिओं) की बुराई से, और ईर्ष्यालु की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।” (कुरआन, 113:1-5)

“कहो : मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से, जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है, जो जिन्नों में से होता है और इंसानों में से भी।” (कुरआन, 114:1-6)

“मेरे रब! मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर।” (कुरआन, 20-114)

“मेरे रब! मेरा सीना खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान बना

दे। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वे (लोग) मेरी बात समझ सकें।  
(कुरआन, 20:25-28)

“ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मेरे माँ-बाप को भी और हर उस व्यक्ति को भी जो मेरे घर ईमानवाला बनकर दाखिल हुआ, और (सामान्य) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को भी (क्षमा कर दे), और ज़ालिमों के विनाश को ही बढ़ा।”  
(कुरआन, 71:28)

“ऐ मेरे रब! मुझे संभाल कि मैं तेरी उस अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञता दिखाऊँ, जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि मैं ऐसा अच्छा कर्म करूँ जो तुझे प्रिय हो और मेरे लिए मेरी संतति में भलाई रख दे। मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ और मैं आज्ञाकारी हूँ।”  
(कुरआन, 46:15)

“ये वे लोग हैं जो कहते हैं : हमारे रब! हम ईमान लाए हैं। अतः हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा।”  
(कुरआन, 3:16)

❑ मुझे दुश्मनों की साज़िश कब हानि नहीं पहुँचा सकती?

“यदि तुमने धैर्य से काम लिया और (खुदा का) डर रखा, तो उनकी कोई चाल तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकती। जो कुछ वे (दुश्मन) कर रहे हैं, खुदा ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।”  
(कुरआन, 3:120)

❑ मैं प्रभावी कब हो सकता हूँ?

“हताश न हो और दुखी न हो, यदि तुम ईमानवाले हो, तो तुम्हीं प्रभावी रहोगे।”  
(कुरआन, 3:139)

❑ मैं अपने उद्देश्य को कैसे पा सकता हूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य से काम लो और (मुकाबले में) बढ़-चढ़कर धैर्य दिखाओ और जुटे और डटे रहो और खुदा से हारते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।”  
(कुरआन, 3:200)

### □ खुदा से डर कर मैं नेक बना रहूँ तो मुझे क्या मिलेगा?

“किन्तु जो लोग अपने ख़ब से डरते हैं उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। यह ख़ुदा की ओर से पहला आतिथ्य-सत्कार होगा और जो कुछ ख़ुदा के पास है, वह नेक और वफ़ादार लोगों के लिए सबसे अच्छा है।” (कुरआन, 3:198)

### □ मैं ख़ुदा व रसूल का आज्ञापालन करूँ तो क्या होगा?

“ये ख़ुदा की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे ख़ुदा ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है।” (कुरआन, 4:13)

### □ मैं ख़ुदा और रसूल का आज्ञापालन न करूँ तो क्या होगा?

“परन्तु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे ख़ुदा आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।” (कुरआन, 4:14)

### □ गुनाह के बाद मैं ख़ुदा की ओर कैसे पलट सकूँ?

“और जिसने तौबा की और अच्छा कर्म किया, तो निश्चय ही वह ख़ुदा की ओर पलटता है, जैसा कि पलटने का हक़ है।” (कुरआन, 25:71)

### □ मेरे गुनाह ख़ुदा कब माफ़ करेगा?

“ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम ख़ुदा का डर रखोगे तो वह तुम्हें एक विशिष्टता प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा। ख़ुदा बड़ा अनुग्राहक है।” (कुरआन, 8:29)

### □ मेरा जीवन कैसे अच्छा व्यतीत हो सकता है?

“जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग

जो अच्छा कर्म करते रहे, उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।”  
(कुरआन, 16:97)

#### □ खुदा मुझे सही मार्ग कब दिखाता है?

“जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं : उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी? कहो : खुदा जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है। अपनी ओर से वह मार्गदर्शन उसी का करता है जो रुजू होता है।”

(कुरआन, 13:27)

#### □ खुदा का शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बनने का मुझे क्या लाभ होगा?

“जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूंगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।”

(कुरआन, 14:7)

#### □ कुरआन मेरे लिए कब मार्गदर्शक बनता है?

“वह किताब यही है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है डर रखनेवालों के लिए, जो अनदेखे ईमान लाते हैं, नमाज़ कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं, और जो उसपर ईमान लाते हैं जो तुमपर उतरा और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ है और आखिरत पर वही लोग विश्वास रखते हैं, वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।”

(कुरआन, 2:2-5)

#### □ मुझे किस चीज़ से डरना और बचना चाहिए?

“डरो उस आग से जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं, जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है।”

(कुरआन, 2:24)

#### □ मैं नुक़सान में कब रहूँगा?

“जो खुदा की प्रतिज्ञा को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं और जिसे खुदा ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, वही हैं जो घाटे में हैं।”

(कुरआन, 2:27)

❑ मुझे जन्नत में जाने के लिए ईमान के अतिरिक्त और क्या करना होगा?

“और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बागों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाँव में दाखिल करेंगे।”  
(कुरआन, 4:57)

❑ कौन-सा परिणाम मेरे लिए अच्छा है?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुममें अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम खुदा और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम खुदा और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।” (कुरआन, 4:59)

❑ मेरे लिए वास्तविक मार्गदर्शन कहाँ है?

“कह दो : खुदा का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है। और यदि उस ज्ञान के पश्चात् जो तुम्हारे पास आ चुका है, तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो खुदा से बचानेवाला न तो तुम्हारा कोई मित्र होगा न सहायक।”  
(कुरआन, 2:120)

❑ क्या लोगों के अच्छे या बुरे कर्मों के बारे में मुझसे पूछ-गछ होगी?

“वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसका है, और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारा है। और जो कुछ वे करते रहे उसके विषय में तुमसे कोई पूछ-गछ न की जाएगी।” (कुरआन, 2:134)

“वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसके लिए है और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारे लिए है। और तुमसे उसके विषय में न पूछा जाएगा, जो कुछ वे करते रहे हैं।” (कुरआन, 2:141)

❑ मुझे किसके रंग में रंगना चाहिए?

“(ऐ पैग़म्बर कहो) खुदा का रंग ग्रहण करो, उसके रंग से अच्छा और

किसका रंग हो सकता है? और हम तो उसी की बन्दगी करते हैं?”

(कुरआन, 2:138)

### ❑ मुझे किस चीज़ की तरफ़ अग्रसरता दिखानी चाहिए?

“प्रत्येक की एक ही दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ। जहाँ कहीं भी तुम होगे खुदा तुम सबको एकत्र करेगा। निस्सन्देह खुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

(कुरआन, 2:148)

### ❑ क्या खुदा मेरे कुछ कामों को नहीं जानता?

“जो कुछ तुम करते हो, खुदा उससे बेखबर नहीं है।”

(कुरआन, 2:149)

“फिर इसके पश्चात् भी तुम्हारे दिल कठोर हो गए, तो वे पत्थरों की तरह हो गए बल्कि उनसे भी अधिक कठोर, क्योंकि कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं कि फट जाते हैं तो उनमें से पानी निकलने लगता है, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं जो खुदा के भय से गिर जाते हैं। और खुदा, जो कुछ तुम कर रहे हो उससे बेखबर नहीं है।”

(कुरआन, 2:74)

### ❑ कोई व्यक्ति मुझपर जुल्म करे तो मैं क्या करूँ?

“प्रतिष्ठित महीना बराबर है प्रतिष्ठित महीने के, और समस्त प्रतिष्ठाओं का भी बराबरी का बदला है। अतः कोई तुमपर ज्यादाती करे, तो जैसी ज्यादाती वह तुमपर करे, तुम भी उसी प्रकार उससे ज्यादाती का बदला ले सकते हो। और खुदा का डर रखो और जान लो कि खुदा डर रखनेवालों के साथ है।”

(कुरआन, 2:194)

### ❑ मुझे अपने जीवन में क्या ज़ादेराह (पाथेय) रखना चाहिए?

“हज के महीने जाने-पहचाने और निश्चित हैं, तो जो इनमें से हज करने का निश्चय करे, तो हज में न तो काम-वासना की बातें हो सकती हैं और न अवज्ञा, न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी

तुम करोगे खुदा उसे जानता होगा। और (ईश-भय का) पाथेय ले लो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय है। और ऐ बुद्धि और समझवालो! मेरा डर रखो।”

(कुरआन, 2:197)

□ मैं किस पर अपना धन खर्च करूँ?

“वे तुमसे पूछते हैं : कितना खर्च करें? कहो : (पहले यह समझ लो कि) जो माल भी तुमने खर्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों, और मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए खर्च हुआ है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्सन्देह खुदा उसे भली-भाँति जान लेगा।”

(कुरआन, 2:215)

□ क्या मेरे लिए ऐसी चीज़ें भी हैं जिनको मैं पसन्द करूँ और वे मेरे लिए हानिकारक हों या जिनको मैं नापसन्द करूँ वे मेरे लिए लाभदायक हों?

“बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। जानता खुदा है, और तुम नहीं जानते।”

(कुरआन, 2:216)

□ खुदा मुझे किस ओर बुलाता है?

“खुदा अपनी अनुज्ञा से जन्नत और क्षमा की ओर बुलाता है। और वह अपनी आयतों लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वे चेतें।”

(कुरआन, 2:221)

□ क्या आख़िरत में मैं अपने स्रष्टा से मिल सकता हूँ?

“अल्लाह से डरते रहो, और भली-भाँति जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है, और ईमान लानेवालों को शुभ-सूचना दे दो।” (कुरआन, 2:223)

□ खुदा मेरा रक्षक और मेरा सहायक कब बनता है?

“जो लोग ईमान लाते हैं, खुदा उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अंधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। रहे वे लोग जिन्होंने इंकार



किया तो उनके संरक्षक बड़े हुए सरकश हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अँधेरों की ओर ले जाते हैं। वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। वे उसी में सदैव रहेंगे।” (कुरआन, 2:257)

### ❑ मुझे क्यों पैदा किया गया?

“मैंने (खुदा ने) तो जिनों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी (खुदा की) बन्दगी करें।” (कुरआन, 51:56)

“बड़ा बरकतवाला है वह, जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। — जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।” (कुरआन, 67:1-2)

### ❑ शैतान मुझे किस चीज़ से डराता है?

“शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि खुदा अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। खुदा बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।” (कुरआन, 2:268)

### ❑ मुझे अपना धन क्यों खर्च करना चाहिए?

“जो कुछ भी माल तुम खर्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा और तुम खुदा के (बताए हुए) उद्देश्य के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से खर्च न करो। और जो माल भी तुम खर्च करोगे, वह पूरा-पूरा तुम्हें चुका दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा।” (कुरआन, 2:272)

### ❑ क्या मैं अपनी इच्छा से किसी को मार्ग पर ला सकता हूँ?

“उन्हें मार्ग पर ला देने का दायित्व तुमपर नहीं है, बल्कि खुदा ही जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है।” (कुरआन, 2:272)

### ❑ इबादत करने से मुझे क्या लाभ होगा?

“ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने رب की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (बुरे कर्मों और आखिरत के अज़ाब से) बच सको।” (कुरआन, 2:21)

### ❑ मुझे गुनाह पर उभारनेवाली किन चीज़ों से बचना चाहिए?

“और जब उससे कहा जाता है : ‘खुदा से डर’, तो अहंकार उसे और गुनाह पर जमा देता है। अतः उसके लिए तो जहन्नम ही काफ़ी है, और वह बहुत-ही बुरी शय्या है।” (कुरआन, 2:206)

### ❑ संतान और धन मुझे क्यों दिए गए हैं?

“तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो केवल एक आजमाइश हैं, और खुदा ही है जिसके पास बड़ा प्रतिदान है।” (कुरआन, 64:15)

### ❑ ज़ालिम बनने के बाद भी क्या खुदा मेरा मार्गदर्शन करेगा?

“उस व्यक्ति से बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा पर चले? निश्चय ही खुदा ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।” (कुरआन, 28:50)

### ❑ खुदा मुझसे जंग का ऐलान कब करता है?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमानवाले हो। फिर यदि तुमने ऐसा न किया तो खुदा और उसके रसूल से युद्ध के लिए खबरदार हो जाओ। और यदि तौबा कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम अन्याय करो और न तुम्हारे साथ अन्याय किया जाए।” (कुरआन, 2:278-279)

### ❑ क्या मेरी नेकियाँ मेरी बुराइयों को मिटा देंगी?

“और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्से में। निस्सन्देह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं। यह याद रखनेवालों के लिए एक अनुस्मरण है।” (कुरआन, 11:114)

### ❑ मैं शैतान से कैसे सुरक्षित रह सकता हूँ?

“अतः जब तुम कुरआन पढ़ने लगे तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए खुदा की पनाह माँग लिया करो। उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।”

(कुरआन, 16:98-99)

“और यदि शैतान की ओर से कोई उकसाहट तुम्हें चुभे तो खुदा की शरण माँग लो। निश्चय ही वह सब कुछ सुनता-जानता है।”

(कुरआन, 41:36)

“कहो : मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से, जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है, जो जिन्नों में से होता है और इंसानों में से भी।”

(कुरआन, 114:1-6)

### □ क्या अल्लाह की रहमत मुझे घेरे हुए है?

“अपनी यातना में मैं तो उसी को ग्रस्त करता हूँ जिसे चाहता हूँ, किन्तु मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है। उसे तो मैं उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो डर रखते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।”

(कुरआन, 7:156)

### □ क्या मेरे लिए दीन (इस्लाम) पर चलना कठिन है?

“और परस्पर मिलकर जिहाद (जीतोड़ कोशिश) करो खुदा के मार्ग में, जैसा कि जिहाद का हक़ है। उसने तुम्हें चुन लिया है—और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी।”

(कुरआन, 22:78)

### □ मेरी नेकियाँ कब बरबाद नहीं होंगी?

“और जो लोग किताब को मज़बूती से थामते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, तो काम को ठीक रखनेवालों के प्रतिदान को हम कभी अकारथ नहीं करते।”

(कुरआन, 7:170)

“और धैर्य से काम लो, इसलिए कि खुदा सुकर्मियों का बदला अकारथ नहीं करता।”

(कुरआन, 11:115)

### □ मुझे मेरे अच्छे और बुरे कामों का कितना बदला दिया जाएगा?

“निस्संदेह खुदा रत्तीभर भी जुल्म नहीं करता और यदि कोई एक नेकी हो तो वह उसे कई गुना बढ़ा देगा और अपनी ओर से बड़ा बदला देगा।”

(कुरआन, 4:40)

## □ मुझे किस दीन (धर्म) को मानना चाहिए?

“अतः एक ओर का होकर अपने रुख को ‘दीन’ (धर्म) की ओर जमा दो, खुदा की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिसपर उसने लोगों को पैदा किया। खुदा की बनाई हुई संरचना नहीं बदली जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।” (कुरआन, 30:30)

## □ क्या दीन (धर्म) खुदा की दृष्टि में इस्लाम ही है?

“आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन (धर्म) को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया। (कुरआन, 5:3)

## □ क्या जन्नत में जाने के लिए मुझे कठिन इम्तिहान देना होगा?

“क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में (यूँ ही) प्रवेश पा जाओगे, जबकि अभी तुमपर वह सब कुछ नहीं बीता है जो तुमसे पहले के लोगों पर बीत चुका? उनपर तंगियाँ और तकलीफें आई, और उन्हें हिला मारा गया, यहाँ तक कि (उस समय के) रसूल बोल उठे और उसके साथ के ईमानवाले भी कि खुदा की सहायता कब आएगी? जान लो! खुदा की सहायता निकट है।” (कुरआन, 2:214)

## □ क्या खुदा मेरे लिए प्रत्येक बात में आसानी चाहता है?

“रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ। अतः तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले। खुदा तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख्ती और कठिनाई नहीं चाहता, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उसपर खुदा की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।” (कुरआन, 2:185)

- ❑ वह कौन-सा काम है जिसको करने से मैं नेक व परहेज़गार बन सकता हूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा के लिए खूब उठनेवाले, इंसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इंसाफ़ करना छोड़ दो। इंसाफ़ करो, यही परहेज़गारी से अधिक निकट है। खुदा का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो खुदा को उसकी ख़बर है।” (कुरआन, 5:8)

- ❑ मुझसे कोई गुनाह हो जाए तो मुझे क्या करना चाहिए?

“और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर जुल्म करते हैं, तो तत्काल खुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं—और खुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहीं बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।” (कुरआन, 3:135-136)

- ❑ वे कौन से काम हैं जिन्हें करने से दुनिया व आखिरत में मुझे अज़ाब होगा?

“निस्सन्देह जो लोग शरीफ़ पाकदामन, भोली-भाली बेख़बर ईमानवाली स्त्रियों पर तोहमत लगाते हैं उनपर दुनिया व आखिरत में फिटकार है। और उनके लिए एक बड़ी यातना है।” (कुरआन, 24:23)

- ❑ क्या मुझे अच्छे कामों के अतिरिक्त बुरे कामों में भी लोगों की सहायता करनी चाहिए?

“हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। खुदा का डर रखो, निश्चय ही खुदा बड़ा कठोर दण्ड देनवाला है।”

(कुरआन, 5:2)

## ❑ मुझे किस व्यक्ति का कहना न मानना चाहिए?

“ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जिसके दिल को हमने अपनी याद से गाफ़िल पाया है और वह अपनी इच्छा और वासना के पीछे लगा हुआ है और उसका मामला हद से आगे बढ़ गया है।” (कुरआन, 18:28)

## ❑ मेरी क्रौम की दशा क्यों नहीं बदलती?

“किसी क्रौम के लोगों को जो कुछ प्राप्त होता है खुदा उसे बदलता नहीं, जब तक कि वे स्वयं अपने आपको न बदल डालें। और जब खुदा किसी क्रौम का अनिष्ट चाहता है तो फिर वह उससे टल नहीं सकता, और उससे हटकर उनका कोई समर्थक और संरक्षक भी नहीं।” (कुरआन, 13:11)

## ❑ क्या आखिरत की तैयारी के साथ-साथ मैं दुनिया में भी अच्छा जीवन गुज़ारने की कोशिश कर सकता हूँ?

“जो कुछ खुदा ने तुझे दिया है, उसमें आखिरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि खुदा ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही खुदा बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 28:77)

## ❑ क्या मुझे कंजूसी करनी चाहिए?

“जो लोग उस चीज़ में कंजूसी से काम लेते हैं, जो खुदा ने अपनी उदार कृपा से उन्हें प्रदान की है, वे यह न समझें कि यह उनके हित में अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कंजूसी से काम लिया होगा, वही आगे क्रियामत के दिन उनके गले का तौक बन जाएगा। और ये आकाश और धरती अंत में खुदा ही के लिए रह जाएँगे। तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी खबर रखता है।” (कुरआन, 3:180)

## ❑ मैं शैतान का कहना मानूँ तो क्या होगा?

“उनपर शैतान ने पूरी तरह अपना प्रभाव जमा लिया। अतः उसने खुदा की याद को उनसे भुला दिया। वे शैतान की पार्टीवाले हैं। सावधान रहो शैतान की पार्टीवाले ही घाटे में रहनेवाले हैं।” (कुरआन, 58:19)

### □ मुझे खुदा कैसे आजमाता है?

“हर जीव को मौत का मज़ा चखना है और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा करते हैं। अन्ततः तुम्हें हमारी ही ओर पलट कर आना है।” (कुरआन, 21:35)

### □ मेरे लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) क्या हैं?

“निस्सन्देह तुम्हारे लिए खुदा के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो खुदा और अंतिम दिन की आशा रखता हो और खुदा को अधिक याद करे।” (कुरआन, 33:21)

“ऐ नबी! हमने तुमको साक्षी और शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है।” (कुरआन, 33:45)

### □ मुझे जन्नत पाने की शुभ सूचना कब मिल सकती है?

“जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब भी उनमें से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह तो वही है जो पहले हमें मिला था, और उन्हें मिलता-जुलता ही (फल) मिलेगा, उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ पत्नियाँ होंगी, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।”

(कुरआन, 2:25)

### □ क्या खुदा मेरी हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है?

“और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए, तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो। निश्चय ही, खुदा हर चीज़ का हिसाब रखता है।” (कुरआन, 4:86)

### □ मुझे किस बात से बेपरवाह न होना चाहिए?

“अपने रब को अपने मन में प्रातः और संध्या के समयों में विनम्रतापूर्वक, डरते हुए और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो। और उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।” (कुरआन, 7:205)

□ वे कौन-से काम हैं जो मुझे जन्नत में ले जा सकते हैं?

“सफल हो गए ईमानवाले, जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं, और जो व्यर्थ बातों से पहलू बचाते हैं, और जो ज़कात अदा करते हैं, और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं—सिवाय इस सूरत के कि अपनी पत्नियों या लौण्डियों के पास जाएँ कि इसपर वे निन्दनीय नहीं हैं। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सीमोल्लंघन करनेवाले हैं।—और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं, और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं, वही वारिस होनेवाले हैं। जो फ़िरदौस (जन्नत) की विरासत पाएँगे। वे उसमें सदैव रहेंगे।”

(कुरआन, 23:1-11)

□ जिस दीन (धर्म) पर चलने को खुदा मुझे कहता है क्या वह कोई नया दीन है?

“उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी। और वह (जीवन्त आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को की थी यह है कि ‘धर्म को क्रायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ।’ बहुदेववादियों को वह चीज़ बहुत अप्रिय है, जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाते हो। खुदा जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है और वह अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करता है।”

(कुरआन, 42:13)

□ क्या कोई ऐसा भी काम है जिसे करने से आखिरत में खुदा मुझे बिल्कुल माफ़ न करे?

“खुदा इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी ठहराया जाए। किन्तु इससे नीचे के दर्जे के अपराध को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा और जिस किसी ने खुदा का साझी ठहराया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ घड़ लिया।”

(कुरआन, 4:48)



“तुम्हारी ओर और जो लोग तुमसे पहले गुजर चुके हैं उनकी ओर प्रकाशना की जा चुकी है कि ‘यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।’” (कुरआन, 39:65)

### ❑ मुझे कैसी नेकी करनी चाहिए?

“नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि नेकी तो उसकी नेकी है जो खुदा, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनार्थों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया और गर्दन झुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अपने वचन को ऐसे लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दें, और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में जमनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखनेवाले हैं।” (कुरआन, 2:177)

### ❑ मुझे जन्नत में जाने के लिए ईमान लाने व इबादत करने के अतिरिक्त और किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए?

“और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और खुदा को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं। और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर जुल्म करते हैं, तो तत्काल खुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं—और खुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।” (कुरआन, 3:133-136)

□ मेरा कर्जदार अगर मेरा कर्ज वापस न करे, तो मैं क्या करूँ?

“और यदि कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मुहलत देनी होगी, और सदका कर दो, (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जान सको।” (कुरआन, 2:280)

□ क्या दावत खाकर मुझे और अधिक रुकना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! नबी के घरों में प्रवेश न करो, सिवाय इसके कि कभी तुम्हें खाने पर आने की अनुमति दी जाए। वह भी इस तरह कि उसकी (खाना पकने की) तैयारी की प्रतीक्षा में न रहो। अलबत्ता जब तुम्हें बुलाया जाए तो अन्दर जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ, बातों में लगे न रहो। निश्चय ही तुम्हारी यह हरकत नबी को तकलीफ़ देती है। किन्तु उन्हें तुमसे लज्जा आती है। किन्तु खुदा सच्ची बात कहने से लज्जा नहीं करता।” (कुरआन, 33:53)

□ खुदा मेरा काम कब बनने नहीं देता?

“फिर जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा : तुम जो कुछ लाए हो जादू है। खुदा अभी उसे मलियामेट किए देता है। निस्सन्देह खुदा बिगाड़ पैदा करनेवालों के कर्म को फलीभूत नहीं होने देता।” (कुरआन, 10:81)

□ किसी की बुरी बात के जवाब में मुझे क्या करना चाहिए?

“बुराई को उस ढंग से दूर करो, जो सबसे उत्तम हो। हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ बातें वे बनाते हैं।” (कुरआन, 23:96)

□ क्या जन्नत में, मैं अपने रिश्तेदारों से मिल सकता हूँ?

“और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो हमने उन्हें दिया है, उसमें से खुले और छिपे खर्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आखिरत के घर का अच्छा परिणाम है, अर्थात् सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके

पास पहुँचेंगे।”

(कुरआन, 13:22-23)

### ❑ मुझे हानि और लाभ कब पहुँचता है?

“तुम्हें जो भी भलाई प्राप्त होती है, वह खुदा की ओर से है और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है तो वह तुम्हारे अपने ही कारण पेश आती है।”

(कुरआन, 4:79)

### ❑ खुदा मुझे जो चीज़ देता है उसे मैं क्या समझूँ?

“अतः जब मनुष्य को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारने लगता है, फिर जब हमारी ओर से उसपर कोई अनुकम्पा होती है तो कहता है: ‘यह तो मुझे ज्ञान के कारण प्राप्त हुआ है।’ नहीं, बल्कि यह तो एक परीक्षा है, किन्तु उसमें से अधिकतर जानते नहीं।”

(कुरआन, 39:49)

### ❑ मुझे खुदा से क्या माँगते रहना चाहिए?

“खुदा से उसका उदार दान चाहो। निस्सन्देह खुदा को हर चीज़ का ज्ञान है।”

(कुरआन, 4:32)

### ❑ मुझे अपनी निगाहों का कैसा इस्तेमाल करना चाहिए?

“ईमानवाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यही उनके लिए अच्छी बात है। खुदा को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे किया करते हैं। और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने शृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उसमें खुला रहता है।”

(कुरआन, 24:30-31)

### ❑ मैं खुदा की दृष्टि में कैसे इज़्ज़तवाला बन सकता हूँ?

“ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में खुदा के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे

अधिक डर रखता है। निश्चय ही खुदा सब कुछ जाननेवाला, खबर रखनेवाला है।”  
(कुरआन, 49:13)

### □ अधिक अच्छा बदला मुझे कब मिल सकता है?

“मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाली स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्य रखनेवाली स्त्रियाँ, विनम्रता दिखानेवाले पुरुष और विनम्रता दिखानेवाली स्त्रियाँ, सदक्रा (दान) देनेवाले पुरुष और दान देनेवाली स्त्रियाँ, रोज़ा रखनेवाले पुरुष और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करनेवाले पुरुष और रक्षा करनेवाली स्त्रियाँ और खुदा को अधिक याद करनेवाले पुरुष और याद करनेवाली स्त्रियाँ—इनके लिए खुदा ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।”  
(कुरआन, 33:35)

### □ मेरा वास्तविक मित्र कौन है?

“रहे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, वे सब परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और खुदा और उसके रसूल का आज्ञापालन करते हैं। ये वे लोग हैं, जिनपर शीघ्र ही खुदा दया करेगा। निस्सन्देह खुदा प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।”  
(कुरआन, 9:71)

### □ मैं अपने घरवालों को किस चीज़ का हुक्म दूँ?

“और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही तुम्हें देते हैं, और अच्छा परिणाम तो धर्मपरायणता ही के लिए निश्चित है।”

(कुरआन, 20:132)

### □ मैं कितने समय तक अपने बच्चों को उसकी माँ का दूध पिलवा सकता हूँ?

“और जो कोई पूरी अवधि तक (बच्चे को) दूध पिलवाना चाहे, तो

माएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलाएँ। और वह जिसका बच्चा है, सामान्य नियम के अनुसार उनके खाने और उनके कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी पर बस उसकी अपनी समाई भर ही ज़िम्मेदारी है, न तो कोई माँ अपने बच्चे के कारण (बच्चे के बाप को) नुक़सान पहुँचाए और न बाप अपने बच्चे के कारण (बच्चे की माँ को) नुक़सान पहुँचाए। और इसी प्रकार की ज़िम्मेदारी उसके वारिस पर भी आती है। फिर यदि दोनों पारस्परिक स्वेच्छा और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर कोई गुनाह नहीं। और यदि तुम अपनी संतान को किसी अन्य स्त्री से दूध पिलवाना चाहो तो इसमें भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुमने जो कुछ बदले में देने का वादा किया हो, सामान्य नियम के अनुसार उसे चुका दो। और खुदा का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे देख रहा है।”

(कुरआन, 2:233)

❑ मुझे अपने ख़ानदान की विधवाओं का कितने समय बाद दूसरा निकाह करवाना चाहिए?

“और तुममें से जो लोग मर जाएँ और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ अपने-आपको चार महीने और दस दिन तक रोके रखें। फिर जब वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्त) को पहुँच जाएँ, तो सामान्य नियम के अनुसार वे अपने लिए जो कुछ करें, उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं। जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसकी ख़बर रखता है।”

(कुरआन, 2:234)

❑ मुझे किस बात से सावधान रहना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे माल तुम्हें खुदा की याद से गाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।”

(कुरआन, 63:9)

❑ मैं कौन-सा काम न करूँ?

“अतः जो अनाथ हो उसे मत दबाना, और जो माँगता हो उसे न झिड़कना।”

(कुरआन, 93:9-10)

❑ मेरे लिए खुदा की याद का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या है?

“निससंदेह मैं ही खुदा हूँ। मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।” (कुरआन, 20:14)

### □ मैं अपने रब को कैसे पुकारूँ?

“अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो। निश्चय ही वह हृदय से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता। और धरती में उसके सुधार के पश्चात् बिगाड़ न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही, खुदा की दयालुता सत्कर्मियों लोगों के निकट है।”

(कुरआन, 7:55-56)

### □ मैं खुदा से कैसे करीब हो सकता हूँ?

“कदापि नहीं उसकी (अधर्मी की) बात न मानो और सज्जदे करते रहो और (प्रभु से) करीब होते रहो।” (कुरआन, 96:19)

### □ मैं अपने अतिरिक्त ख़ास तौर पर और किसे जहन्नम से बचाने की कोशिश करूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो खुदा की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।”

(कुरआन, 66:6)

### □ मेरे दिल को आराम और चैन कैसे मिल सकता है?

“ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को खुदा के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।”

(कुरआन, 13:28)

### □ मेरे हज और कुरबानी में खुदा क्या देखता है?

“न उनके मांस खुदा को पहुँचते हैं और न उनके रक्त। किन्तु उसे तुम्हारा तक्रवा (धर्मपरायणता) पहुँचता है। इस प्रकार उसने उन्हें तुम्हारे

लिए वशीभूत किया है, ताकि तुम खुदा की बड़ाई बयान करो, इसपर कि उसने तुम्हारा मार्गदर्शन किया और सुकर्मियों को शुभ सूचना दे दो।”

(कुरआन, 22:37)

□ मैं जो कुछ खुदा के रास्ते में खर्च करता हूँ, क्या मुझे उसका बदला मिलेगा?

“कह दो : ‘मेरा खर्च ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने खर्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।”

(कुरआन, 34:39)

“खुदा ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया और इसलिए कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाए, और उनपर जुल्म न किया जाए।”

(कुरआन, 45:22)

“जो कुछ भी माल तुम (भले कामों में) खर्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा और तुम खुदा के (बताए हुए) उद्देश्य के सिवा किसी और उद्देश्य से खर्च न करो और जो माल भी तुम (भले कामों में) खर्च करोगे, वह पूरा का पूरा तुम्हें चुका दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा।”

(कुरआन, 3:85)

□ खुदा ने मेरे लिए कौन-सा धर्म पसन्द किया है?

“जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आखिरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा।”

(कुरआन, 3:85)

“दीन (धर्म) तो खुदा की दृष्टि में इस्लाम ही है। जिन्हें किताब दी गई थी, उन्होंने तो इसमें इसके पश्चात् विभेद किया कि ज्ञान उनके पास आ चुका था। ऐसा उन्होंने परस्पर दुराग्रह के कारण किया। जो खुदा की आयतों का इंकार करेगा तो खुदा भी जल्द हिसाब लेनेवाला है।” (कुरआन, 3:19)

□ मैं नेकी कैसे कर सकता हूँ?

“तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तक कि उन चीज़ों को (खुदा के मार्ग में) खर्च न करो, जो तुम्हें प्रिय हैं। और जो चीज़ भी तुम खर्च करोगे, निश्चय ही खुदा को उसका ज्ञान होगा।”

(कुरआन, 3:92)

#### ❑ मुझ पर हज कब फ़र्ज़ होता है?

“उसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, वह इबराहीम का स्थल है। और जिसने उसमें प्रवेश किया, वह निश्चिन्त हो गया। लोगों पर खुदा का हक्क है कि जिसको वहाँ तक पहुँचने का सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज़ करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से खुदा का कुछ नहीं बिगड़ता), खुदा तो सारे संसार से निरपेक्ष है।”

(कुरआन, 3:97)

#### ❑ मैं सीधे व सच्चे रास्ते पर कब हो सकता हूँ?

“अब तुम इनकार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम्हें खुदा की आयतें पढ़कर सुनाई जा रही हैं और उसका रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है? जो कोई खुदा को मज़बूती से पकड़ ले वह सीधे रास्ते पर आ गया।”

(कुरआन, 3:101)

#### ❑ मुझे बहुत अच्छा बदला कब मिलेगा?

“खुदा ईमानवालों को इस दशा में नहीं रहने देगा, जिसमें तुम हो। यह तो उस समय तक की बात है जब तक कि वह अपवित्र को पवित्र से पृथक् नहीं कर देता। और खुदा ऐसा नहीं है कि वह तुम्हें परोक्ष की सूचना दे दे। किन्तु खुदा इस काम के लिए जिसको चाहता है चुन लेता है, और वे उसके रसूल होते हैं। अतः खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और यदि तुम ईमान लाओगे और (खुदा का) डर रखोगे तो तुमको बड़ा प्रतिदान मिलेगा।”

(कुरआन, 3:179)

#### ❑ मुझे कैसा नहीं होना चाहिए?

“तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो विभेद में पड़ गए, और इसके पश्चात् कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं, वे विभेद में पड़ गए।



ये वही लोग हैं, जिनके लिए बड़ी (घोर) यातना है।” (कुरआन, 3:105)

❑ मैं कामयाब लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ?

“और तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करनेवाले लोग हैं।” (कुरआन, 3:104)

❑ मैं अपना राज़दार किसे बनाऊँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! अपनों को छोड़कर दूसरों को अपना अंतरंग मित्र न बनाओ, वे तुम्हें नुकसान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते। जितनी भी तुम कठिनाई में पड़ो, वही उनको प्रिय है। उनका द्वेष तो उनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं, वह तो इससे भी बढ़कर है। यदि तुम बुद्धि से काम लो, तो हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं।” (कुरआन, 3:118)

❑ खुदा मेरी तौबा कब स्वीकार करता है?

“उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल करना खुदा के ज़िम्मे है जो भावनाओं में बह कर नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर जल्द ही तौबा कर लें, ऐसे ही लोग हैं जिनकी तौबा खुदा क़बूल करता है। खुदा सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।” (कुरआन, 4:17)

❑ खुदा मेरी तौबा कब स्वीकार नहीं करता?

“और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो कहने लगता है: ‘अब मैं तौबा करता हूँ।’ और इसी प्रकार तौबा उसकी भी नहीं है, जो मरते दम तक इन्कार करनेवाले ही रहें। ऐसे लोगों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।” (कुरआन, 4:18)

❑ जो चीज़ मुझे नापसन्द है क्या वह हमेशा मेरे लिए हानिकारक होती है?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे लिए वैध नहीं कि स्त्रियों के माल के

ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो, और न यह वैध है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है, उनमें से कुछ ले उड़ो। परन्तु यदि वे खुले रूप में अशिष्ट कर्म कर बैठें तो दूसरी बात है। और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो। फिर यदि वे तुम्हें पसन्द न हों, तो संभव है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो और खुदा उसमें बहुत कुछ भलाई रख दे।”

(कुरआन, 4:19)

### □ मेरे गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं?

“यदि तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहो, जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें प्रतिष्ठित स्थान में प्रवेश कराएँगे।”

(कुरआन, 4:31)

### □ खुदा मेरे लिए क्या चाहता है?

“खुदा चाहता है कि तुमपर स्पष्ट कर दे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों पर चलाए जो तुमसे पहले हुए हैं और तुमपर दया दृष्टि करे। खुदा तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है। और खुदा चाहता है कि तुमपर दया दृष्टि करे, किन्तु जो लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं का पालन करते हैं, वे चाहते हैं कि तुम राह से हटकर बहुत दूर जा पड़ो। खुदा चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इंसान निर्बल पैदा किया गया है।”

(कुरआन, 4:26-28)

### □ मेरे लिए किसकी मदद काफ़ी होनी चाहिए?

“खुदा तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जानता है। खुदा एक संरक्षक के रूप में काफ़ी है और खुदा एक सहायक के रूप में भी काफ़ी है।”

(कुरआन, 4:45)

### □ ईमान के साथ मैं अच्छे कार्य भी करूँ तो क्या होगा?

“और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाँव में दाखिल करेंगे।”

(कुरआन, 4:57)

□ मेरे पास अमानत रखवाई जाए तो मुझे क्या करना चाहिए?

“और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिसपर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और खुदा का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो खुदा उसे भली-भाँति जानता है।” (कुरआन, 2:283)

□ वह कौन-सा काम है जिसके करने से मेरे दिल में बिगाड़ पैदा होता है?

“फिर परिणाम यह हुआ कि उसने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए कपटाचार डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे, इसलिए कि उन्होंने खुदा से जो प्रतिज्ञा की थी उसे भंग कर दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।”

(कुरआन, 9:77)

□ मैं सबसे अधिक मुहब्बत किस से करूँ?

“कुछ लोग ऐसे भी हैं जो खुदा से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए। और कुछ ईमानवाले हैं उन्हें सबसे बढ़कर खुदा से प्रेम होता है।”

(कुरआन, 2:165)

□ मैं खुदा की दृष्टि में सफल हो रहा हूँ, इस बात की मेरे लिए क्या निशानी है?

“जो अपने मन के लोभ और कृपणता से बचा लिए जाएँ ऐसे लोग सफल हैं।”

(कुरआन, 59:9)

“अतः जहाँ तक तुम्हारे बस में हो खुदा का डर रखो और सुनो और आज्ञापालन करो और खर्च करो अपनी भलाई के लिए। और जो अपने मन के लोभ एवं कृपणता से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही लोग सफल हैं।”

(कुरआन, 64:16)

### ❑ मेरा सबसे बुरा साथी कौन है?

“वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं, न खुदा पर ईमान रखते हैं, न अंतिम दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हुआ, तो वह बहुत ही बुरा साथी है।”  
(कुरआन, 4:38)

### ❑ मुझे खुदा को कैसे पुकारना चाहिए?

“उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। फिर कोई प्राणी नहीं जानता आँखों की जो ठंडक उसके लिए छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो वे करते रहे होंगे।”

(कुरआन, 32:16-17)

### ❑ मेरे लिए जीवन की परिभाषा क्या है?

“जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करें कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।”  
(कुरआन, 67:2)

### ❑ मुझे खुदा से कैसे मदद माँगनी चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्सन्देह खुदा उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।”

(कुरआन, 2:153)

### ❑ मेरा सबसे बड़ा वास्तविक शत्रु कौन है?

“ऐ लोगो! धरती में जो हलाल और अच्छी-सुथरी चीज़ें हैं उन्हें खाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला शत्रु है।”

(कुरआन, 2:168)

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम सब इस्लाम (आज्ञापालन) में दाखिल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला शत्रु है।”

(कुरआन, 2:208)

❑ मैं खुदा से कैसे वफ़ादारी दिखा सकता हूँ?

“वफ़ादारी और नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि वफ़ादारी तो उसकी वफ़ादारी है जो खुदा, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनार्थों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया और गर्दन छुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अपने वचन को ऐसे लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दें, और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में ज़मनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखनेवाले हैं।”

(कुरआन, 2:177)

❑ मुझपर रोज़े रखना क्यों फ़र्ज़ किया गया है?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ।”

(कुरआन, 2:183)

❑ मेरा स्रष्टा मेरे लिए क्या चाहता है?

“खुदा तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख्ती और कठिनाई नहीं चाहता।”

(कुरआन, 2:185)

❑ खुदा की निगाह में मैं ज़ालिम कब बनता हूँ?

“जो कोई खुदा की सीमाओं का उल्लंघन करे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।”

(कुरआन, 2:229)

❑ मुझे क्या याद रखना चाहिए?

और खुदा की आयतों को परिहास का विषय न बनाओ, और खुदा की कृपा जो तुमपर हुई है उसे याद रखो और उस किताब और तत्त्वदर्शिता (हिकमत) को याद रखो जो उसने तुमपर उतारी है, जिसके द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। और खुदा का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि खुदा हर चीज़ को जाननेवाला है।”

(कुरआन, 2:231)

### □ क्या खुदा मेरे सभी कामों को देख रहा है?

“खुदा का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे देख रहा है।” (कुरआन, 2:233)

“जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी खबर रखता है।” (कुरआन, 2:234)

“जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बात जानता है। अतः उससे सावधान रहो और यह भी जान लो कि खुदा अत्यन्त क्षमा करनेवाला, सहनशील है।” (कुरआन, 2:235)

“तुम नमी से काम लो तो यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और तुम एक-दूसरे को हक़ से बढ़कर देना न भूलो। निश्चय ही खुदा उसे देख रहा है, जो कुछ तुम करते हो।” (कुरआन, 2:237)

“और वे तुमसे अनार्थों के विषय में पूछते हैं। कहो : ‘उनके सुधार की जो रीति भी अपनाई जाए अच्छी है। और यदि तुम उन्हें अपने साथ सम्मिलित कर लो तो वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही हैं। और खुदा बिगाड़ पैदा करनेवाले को बनाव पैदा करनेवाले से अलग पहचानता है। और यदि खुदा चाहता तो तुमको ज़हमत (कठिनाई) में डाल देता। निस्सन्देह खुदा प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।’” (कुरआन, 2:220)

### □ खुदा मेरा साथ कब देता है?

“कितनी ही बार एक छोटी-सी टुकड़ी ने खुदा की अनुज्ञा से एक बड़े गिरोह पर विजय पाई है। खुदा तो ज़मनेवालों के साथ है।” (कुरआन, 2:249)

“अब खुदा ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया और उसे मालूम हुआ कि तुममें कुछ कमज़ोरी है। तो यदि तुम्हारे सौ आदमी जमे रहनेवाले होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी रहेंगे और यदि तुममें ऐसे हजार होंगे तो खुदा के हुक्म से वे दो हजार पर प्रभावी रहेंगे। खुदा तो उन्हीं लोगों के साथ है जो जमे रहते हैं।” (कुरआन, 8:66)

“ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्सन्देह खुदा उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।”

(कुरआन, 2:153)

❑ धन के सम्बन्ध में, मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है उसमें से खर्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफ़ारिश। ज़ालिम वही हैं, जिन्होंने इंकार की नीति अपनाई।”

(कुरआन, 2:254)

❑ क्या मैं ज़बरदस्ती लोगों को इस्लाम की ओर बुला सकता हूँ?

“धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बड़े हुए सरकश को ठुकरा दे और खुदा पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। खुदा सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।” (कुरआन, 2:256)

❑ ईमान लाने पर खुदा मेरे साथ क्या करता है?

“जो लोग ईमान लाते हैं, खुदा उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अंधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है।” (कुरआन, 2:257)

❑ अगर मैं खुदा के हुक्मों का इंकार करूँ तो क्या होगा?

“और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारे हुक्मों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।” (कुरआन, 2:39)

❑ मुझे किस दिन से डरना चाहिए?

“और डरो उस दिन से जब न कोई किसी की ओर से कुछ तावान भरेगा और न किसी की ओर से कोई सिफ़ारिश ही क़बूल की जाएगी और न किसी की ओर से कोई फ़िद्वा (अर्थदण्ड) लिया जाएगा और न वे सहायता ही पा सकेंगे।”

(कुरआन, 2:48)

“और उस दिन से डरो, जब कोई न किसी के काम आएगा, न किसी की ओर से अर्थदण्ड स्वीकार किया जाएगा, और न कोई सिफ़ारिश ही उसे

लाभ पहुँचा सकेगी, और न उनको कोई सहायता ही पहुँच सकेगी।”

(कुरआन, 2:123)

### □ मेरा भय और उदासी कैसे दूर होगी?

“निस्संदेह, ईमानवाले और जो यहूदी हुए और ईसाई और साबिई, जो भी खुदा और अन्तिम दिन पर ईमान लाया और अच्छा कर्म किया तो ऐसे लोगों का उनके अपने रब के पास (अच्छा) बदला है, उनको न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।”

(कुरआन, 2:62)

### □ मैं खुदा के कुछ आदेशों को मानूँ और कुछ को न मानूँ तो क्या होगा?

“क्या तुम किताब के एक हिस्से को मानते हो और एक को नहीं मानते? फिर तुममें जो ऐसा करें उनका बदला इसके सिवा और क्या हो सकता है कि सांसारिक जीवन में अपमानित हो? और क्रियामत के दिन ऐसे लोगों को कठोर से कठोर यातना की ओर फेर दिया जाएगा। खुदा उससे बेखबर नहीं है जो तुम कर रहे हो।”

(कुरआन, 2:85)

### □ क्या मैं अपने लाभ और अपनी हानि का स्वयं ज़िम्मेदार हूँ?

“जो कोई सीधा मार्ग अपनाए तो उसने अपने ही लिए सीधा मार्ग अपनाया और जो पथभ्रष्ट हुआ, तो वह अपने ही बुरे के लिए भटका। और कोई भी बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और हम लोगों को यातना नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें।”

(कुरआन, 17:15)

### □ अच्छे काम में खर्च किए गए अपने धन का क्या मुझे बदला मिलेगा?

“जो कुछ भी तुमने (अच्छे कर्मों में) खर्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।”

(कुरआन, 34:39)

### □ खुदा का दोस्त बनकर मुझे क्या लाभ होगा?

“सुन लो, खुदा के मित्रों को न तो कोई डर है और न वे शोकाकुल ही होंगे।”

(कुरआन, 10:62)



- ❑ खुदा की नेमतें (स्वास्थ्य, धन, ज्ञान आदि) मुझे और अधिक कैसे मिल सकती हैं?

“जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि ‘यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।” (कुरआन, 14:7)

- ❑ जब कोई मेरे साथ बुराई और जुल्म करे तो मुझे क्या करना चाहिए?

“बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला खुदा के जिम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। और जो कोई अपने ऊपर जुल्म होने के पश्चात् बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं। इलज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और धरती में नाहक ज़्यादती करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है। किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।” (कुरआन, 42:40-43)

- ❑ खुदा मेरे दिल का मार्गदर्शन कब करता है?

“खुदा की अनुज्ञा के बिना कोई भी मुसीबत नहीं आती। जो खुदा पर ईमान ले आए खुदा उसके दिल को मार्ग दिखाता है, और खुदा हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।” (कुरआन, 64:11)

- ❑ मुझे किस बात पर ध्यान देते रहना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो। और प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और खुदा का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही खुदा उसकी पूरी खबर रखता है। और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने खुदा को भुला दिया। तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी हैं।”

(कुरआन, 59:18-19)

### □ खुदा के आदेशों को मानने पर मुझे क्या लाभ होगा?

“हमने कहा : तुम सब यहाँ से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया, तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।”

(कुरआन, 2:38)

### □ मेरा अंजाम कब अच्छा होगा?

“और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही देते हैं, और अच्छा परिणाम तो धर्मपरायणता ही के लिए निश्चित है।” (कुरआन, 20:132)

### □ अच्छे कामों में, मैं अधिक धन खर्च करूँ तो, क्या खुदा मुझे और अधिक धन देगा?

“मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने खर्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।”

(कुरआन, 34:39)

### □ मेरे गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं?

“यदि तुम खुले रूप में सदक़े (दान) दो तो यह भी अच्छा है और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और खुदा को उसकी पूरी ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।”

(कुरआन, 2:271)

### □ मुझे बुरे कामों से क्या चीज़ रोक सकती है?

“उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और खुदा का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। खुदा जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।”

(कुरआन, 29:45)

❑ आखिरत का घर (जन्नत) मुझे कैसे मिल सकता है?

“आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए खास कर देंगे जो न तो धरती में अपनी बड़ाई चाहते हैं और न बिगाड़। परिणाम तो अन्ततः डर रखनेवालों के पक्ष में है।”  
(कुरआन, 28:83)

❑ क्या मैं खुदा के साथ किसी दूसरे को अपनी मदद के लिए पुकार सकता हूँ?

“और खुदा के साथ किसी और इष्ट-पूज्य को न पुकारना। उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। हर चीज़ नाशवान है सिवाय उसके स्वरूप के। फैसला और आदेश का अधिकार उसी को प्राप्त है और उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना है।”  
(कुरआन, 28:88)

❑ क्या अच्छे या बुरे काम करने का मुझपर कोई प्रभाव पड़ता है?

“खुदा किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। उसका है जो उसने कमाया और उसी पर उसका वबाल (आपदा) भी है जो उसने किया।”  
(कुरआन, 2:286)

❑ वह कौन-सा काम है जिसको भूल जाने से मैं स्वयं को भूल जाता हूँ?

“और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने खुदा को भुला दिया। तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी हैं।”  
(कुरआन, 59:19)

❑ आखिरत में मेरी कामयाबी से क्या मुराद है?

“आगवाले और बागवाले (जहन्नमवाले और जन्नतवाले) कभी समान नहीं हो सकते। बागवाले ही सफल हैं।”  
(कुरआन, 59:20)

❑ अगर मैं खुदा के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करूँ तो क्या वह दुनिया व आखिरत (परलोक) में मेरी सहायता करेगा?

“निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए अवश्य सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी, जबकि

गवाह खड़े होंगे।”

(कुरआन, 40:51)

□ अगर मैं इस्लाम से पलट जाऊँ तो क्या होगा?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुममें से जो कोई अपने धर्म से फिरेगा तो खुदा जल्द ही ऐसे लोगों को लाएगा जिनसे उसे प्रेम होगा और जो उससे प्रेम करेंगे। वे ईमानवालों के प्रति नरम और अविश्वासियों के प्रति कठोर होंगे। अल्लाह की राह में जी-तोड़ कोशिश करेंगे और किसी भर्त्सना करनेवाले की भर्त्सना से न डरेंगे। यह खुदा का उदार अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। खुदा बड़ी समाईवाला सर्वज्ञ है।”

(कुरआन, 5:54)

□ इस जीवन में मुझे जो कुछ मिलता है, क्या आखिरत में उन सब का हिसाब देना होगा?

“फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे इन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।”

(कुरआन, 102:8)

□ मुझे अपनी संतान और धन में विशेष तौर पर किस चीज़ से होशियार रहना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे माल तुम्हें खुदा की याद से गाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।”

(कुरआन, 63:9)

□ मुझे गुस्सा आए तो मैं क्या करूँ?

“वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में खर्च (दान) करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और खुदा को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।”

(कुरआन, 3:134)

□ क्या आखिरत में मेरा कोई सहायक होगा?

“ऐ ईमान लानेवालो! हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है उसमें से खर्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफ़ारिश। ज़ालिम वही हैं, जिन्होंने इंकार

की नीति अपनाई है।”

(कुरआन, 2:254)

### □ मेरा विनाश कब हो सकता है?

“तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए, जो माल इकट्ठा करता और उसे गिनता रहा। समझता है कि उसके माल ने उसे अमर कर दिया। कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली में फेंक दिया जाएगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है? वह खुदा की दहकाई हुई आग है, जो झाँक लेती है दिलों को। वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी गई होगी, लम्बे-लम्बे स्तम्भों में।”

(कुरआन, 104:1-9)

### □ क्या मेरी रोज़ी (जीविका) खुदा के ज़िम्मे है?

“धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी खुदा के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।”

(कुरआन, 11:6)

“और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। अतः सौगन्ध है आकाश और धरती के रब की। निश्चय ही वह सत्य बात है ऐसे ही जैसे तुम बोलते हो।”

(कुरआन, 51:22-23)

### □ मुझे किस तरह व्यापार करना चाहिए?

“उसने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन स्थापित किया—कि तुम भी तुला में सीमा का उल्लंघन न करो। न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तौल में कमी न करो।”

(कुरआन, 55:7-9)

“इंसाफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा रखो। और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और धरती में बिगाड़ पैदा करनेवाले बनकर अपने मुँह को कलुषित न करो। यदि तुम मोमिन हो तो जो खुदा के पास शेष रहता है वही तुम्हारे लिए उत्तम है। मैं तुम्हारे ऊपर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ।”

(कुरआन, 11:85-86)

“और जब नापकर दो तो, नाप पूरी रखो। और ठीक तराजू से तौलो,

यही उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी अधिक अच्छा है।”

(कुरआन, 17:35)

“तबाही है घटानेवालों के लिए, जो नापकर लोगों पर नज़र जमाए हुए लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं, किन्तु जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो घटाकर देते हैं।”

(कुरआन, 83:1-3)

□ मैं दान कैसे दिया करूँ?

“एक भली बात कहनी और क्षमा से काम लेना उस सदक़े से अच्छा है, जिसके पीछे दुख हो। और खुदा अत्यन्त निस्पृह (बेनियाज़), सहनशील है। ऐ ईमानवालो! अपने सदक़ों को एहसान जताकर और दुख देकर उस व्यक्ति की तरह नष्ट न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल खर्च करता है और खुदा और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखता तो उसकी हालत उस चट्टान जैसी है जिसपर कुछ मिट्टी पड़ी हुई थी, फिर उसपर ज़ोर की वर्षा हुई और उसे साफ़ चट्टान की दशा में छोड़ गई। ऐसे लोग अपनी कमाई कुछ भी प्राप्त नहीं करते। और खुदा इंकार की नीति अपनानेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।”

(कुरआन, 2:263-264)

“ऐ ईमान लानेवालो! अपनी कमाई की पाक और अच्छी चीज़ों में से खर्च करो और उन चीज़ों में से भी जो हमने धरती में से तुम्हारे लिए निकाली है। और देने के लिए उसके ख़राब हिस्से (के देने) का इरादा न करो, जबकि तुम स्वयं उसे कभी न लोगे। यह और बात है कि उसको लेने में देख-अनदेखी कर जाओ। और जान लो कि खुदा निस्पृह, प्रशंसनीय है।”

(कुरआन, 2:263-267)

“यदि तुम खुले रूप में सदक़े दो तो यह भी अच्छा है और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और खुदा को उसकी पूरी ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।”

(कुरआन, 2:271)

“जो लोग अपने माल रात-दिन छिपे और खुले खर्च करें, उनका बदला तो उनके रब के पास है, और न उन्हें कोई भय है और न वे शोकाकुल

होंगे।”

(कुरआन, 2:274)

### □ मेरे वादे कैसे होने चाहिएँ?

“क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और डर रखेगा, तो खुदा भी डर रखनेवालों से प्रेम करता है।” (कुरआन, 3:76)

“खुदा के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो, जबकि तुमने प्रतिज्ञा की हो। और अपनी क़समों को उन्हें सुदृढ़ करने के पश्चात् मत तोड़ो, जबकि तुम अपने ऊपर खुदा को अपना ज़ामिन बना चुके हो। निश्चय ही खुदा जानता है जो कुछ तुम करते हो।” (कुरआन, 16:91)

“ऐ ईमान लानेवालो! प्रतिबंधों (प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण रूप से पालन करो।” (कुरआन, 5:1)

### □ क्या मेरे वादों के बारे में मुझसे पूछा जाएगा?

“और अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए, और प्रतिज्ञा पूरी करो। प्रतिज्ञा के विषय में अवश्य पूछा जाएगा।” (कुरआन, 17:34)

### □ किन क़समों पर मेरी पकड़ होगी और किन पर नहीं?

“तुम्हारी उन क़समों पर खुदा तुम्हें नहीं पकड़ता जो यूँ ही असावधानी में ज़बान से निकल जाती हैं। परन्तु जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उनपर वह तुम्हें पकड़ेगा। तो इसका प्रायश्चित्त दस मुहताजों को औसत दर्जे का वह खाना खिला देना है जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़े पहनाना या एक गुलाम आज़ाद करना होगा। और जिसे इसकी सामर्थ्य न हो, तो उसे तीन दिन के रोज़े रखने होंगे। यह तुम्हारी क़समों का प्रायश्चित्त है, जबकि तुम क़सम खा बैठो। तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो। इस प्रकार खुदा अपनी आयतें तुम्हारे सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।” (कुरआन, 5:89)

### □ ग़ैर-मुस्लिमों से किए गए अपने वादे को क्या मैं तोड़ सकता हूँ?

“सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने संधि-समझौते किए, फिर उन्होंने

तुम्हारे साथ अपने वचन को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो उनके साथ उनकी संधि को उन लोगों के निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही खुदा को डर रखनेवाले प्रिय हैं।”

(कुरआन, 9:4)

### □ मुझे किस बात की कसम खानी चाहिए?

“तुममें जो बड़ाईवाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और खुदा की राह में घरबार छोड़नेवालों को देने से बाज़ रहने की कसम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि खुदा तुम्हें क्षमा करे? खुदा बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।”

(कुरआन, 24:22)

### □ मुझे धन, ज्ञान और आदर आदि अत्यधिक कैसे मिल सकते हैं?

“तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।”

(कुरआन, 14:7)

### □ क्या इस जीवन में मिली चीज़ों का मुझे आखिरत में हिसाब देना होगा?

“फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।”

(कुरआन, 102:8)

### □ मैं सही मार्ग पर कैसे रह सकता हूँ?

“और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।”

(कुरआन, 2:186)

### □ मेरे लिए खुदा की निशानियाँ कहाँ हैं?

“और धरती में विश्वास करनेवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, और स्वयं तुम्हारे अपने आप में भी। तो क्या तुम देखते नहीं?”

(कुरआन, 51:20-21)



### □ मेरा वास्तविक घर कौन-सा है?

“और यह सांसारिक जीवन तो केवल दिल का बहलावा और खेल है, निस्संदेह पश्चात्‌वर्ती घर (का जीवन) ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते।” (कुरआन, 29:64)

### □ अल्लाह मेरा इम्तिहान कैसे लेता है?

“और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान परीक्षा-सामग्री हैं और यह कि खुदा के पास बड़ा प्रतिदान है।” (कुरआन, 8:28)

“तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान तो केवल आजमाइश हैं, और खुदा ही है जिसके पास बड़ा प्रतिदान है।” (कुरआन, 64:15)

“और हम अवश्य ही कुछ भय से, और कुछ भूख से, और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारी परीक्षा लेंगे। और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो।” (कुरआन, 2:155)

### □ मुझे किन लोगों से ईर्ष्या न करनी चाहिए?

“जो कुछ सुख-सामग्री हमने उनमें से विभिन्न प्रकार के लोगों को दी है, तुम उसपर अपनी आँखें न पसारो और न उनपर दुखी हो।”

(कुरआन, 15:88)

### □ मेरे सभी अच्छे काम बेकार कब हो सकते हैं?

“जिन लोगों ने इसके पश्चात् कि मार्ग उनपर स्पष्ट हो चुका था, इंकार किया और खुदा के मार्ग से रोका और रसूल का विरोध किया, वे खुदा को कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, बल्कि वही उनका सब किया-कराया उनकी जान को लागू कर देगा।” (कुरआन, 47:32)

### □ मुझे वास्तविक हानि कब हो सकती है?

“क्या हम तुम्हें उन लोगों की खबर दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठानेवाले हैं? ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं। यही

वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उससे मिलन का इंकार किया। अतः उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क्रियामत के दिन उन्हें कोई वज्रन न देंगे। उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया। निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके आतिथ्य के लिए फिरदौस के बाग़ होंगे।” (कुरआन, 18:103-107)

### □ मुझे अपने शत्रु के साथ कैसा बर्ताव रखना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा के लिए ख़ूब उठनेवाले, इंसानों की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इंसानों करना छोड़ दो। इंसानों करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। खुदा का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, खुदा को उसकी खबर है।” (कुरआन, 5:8)

### □ मुझपर औरतों का कितना हक़ है?

“और उन पत्नियों के सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं, जैसी उनपर ज़िम्मेदारियाँ डाली गई हैं। और पतियों को उनपर एक दर्जा प्राप्त है। खुदा अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।” (कुरआन, 2:228)

### □ खुदा ने मुझसे किस चीज़ का वादा किया है?

“मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से खुदा ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा है) और खुदा की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का, जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।” (कुरआन, 9:72)

### □ मैं किसी चीज़ के पाने या खोने पर क्या न करूँ?

“जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह खुदा के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे

और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। खुदा किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।” (कुरआन, 57:22-23)

□ मैं स्वयं को और अपने घरवालों को विशेष तौर पर किस चीज़ से बचाऊँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो खुदा की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।” (कुरआन, 66:6)

□ मैं किस चीज़ की चिन्ता करूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुमपर अपनी चिन्ता अनिवार्य है, जब तुम रास्ते पर हो, तो जो कोई भटक जाए वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। खुदा की ओर तुम सबको लौट जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे।” (कुरआन, 5:105)

□ जब मुझसे कोई गुनाह हो जाए तो मैं खुदा से कैसी आशा रखूँ?

“कह दो : ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने आपपर ज़्यादती की है, खुदा की दयालुता से निराश न हों। निस्संदेह खुदा सारे गुनाहों को क्षमा कर देता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। रुजू हो अपने रब की ओर और उसके आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी।” (कुरआन, 39:53)

□ दुनिया में बहुत-से लोग धन के आधार पर मुझसे बढ़कर या मुझसे कमतर क्यों हैं?

“क्या वे तुम्हारे रब की दयालुता को बाँटते हैं? सांसारिक जीवन में उनके जीवन-यापन के साधन हमने उनके बीच बाँटे हैं और हमने उनमें से कुछ लोगों को दूसरे लोगों से श्रेणियों की दृष्टि से उच्च रखा है, ताकि उनमें से वे एक-दूसरे से काम लें। और तुम्हारे रब की दयालुता उससे कहीं उत्तम है जिसे

वे समेट रहे हैं।”

(कुरआन, 43:32)

□ मैं सही रास्ते पर कब होता हूँ?

“अलिफ़० लाम० मीम०। वह किताब यही है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है डर रखनेवालों के लिए, जो अनदेखे ईमान लाते हैं, नामज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उनमें से खर्च करते हैं, और जो उस पर ईमान लाते हैं जो तुम पर उतरा और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ है और आखिरत पर वही लोग विश्वास रखते हैं, वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।”

(कुरआन, 2:1-5)

“अलिफ़० लाम० मीम०। (जो आयतें उतर रही हैं) वे तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण किताब की आयतें हैं; मार्गदर्शन और दयालुता उत्तमकारों के लिए; जो नमाज़ का आयोजन करते हैं और ज़कात देते हैं और आखिरत पर विश्वास रखते हैं। वही लोग रब की ओर से सही मार्ग पर हैं और वही सफल हैं।”

(कुरआन, 31:1-5)

□ खुदा मेरी तौबा कब क़बूल करता है?

“उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल करना खुदा के ज़िम्मे है जो भावनाओं में ब्रह्मकर नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर जल्द ही तौबा कर लें, ऐसे ही लोग हैं जिनकी तौबा खुदा क़बूल करता है। खुदा सब कुछ जाननेवाला तत्त्वदर्शी है।”

(कुरआन, 4:17)

“फिर जो व्यक्ति अत्याचार करने के पश्चात् पलट आए और अपने को सुधार ले, तो निश्चय ही वह खुदा की कृपा का पात्र होगा। निस्संदेह, खुदा बड़ा क्षमाशील, दयावान है।”

(कुरआन, 5:39)

□ खुदा मेरी तौबा कब क़बूल नहीं करता ?

“और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो कहने लगता है: अब मैं तौबा करता हूँ और इसी प्रकार तौबा उसकी भी नहीं है, जो मरते

दम तक इंकार करनेवाले ही रहें। ऐसे लोगों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।” (कुरआन, 4:18)

□ **खुदा और रसूल के आदेशों को सुनकर मुझे क्या कहना चाहिए?**

“मोमिनों की बात तो बस यह होती है कि जब खुदा और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएँ, ताकि वह (रसूल) उनके बीच फैसला करे, तो वे कहें: ‘हमने सुना और आज्ञापालन किया।’ और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।” (कुरआन, 24:51)

□ **खुदा का आज्ञापालन करने पर मुझे क्या मिलेगा?**

“ये खुदा की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। जो कोई खुदा और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे खुदा ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है।” (कुरआन, 4:13)

“जो खुदा और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ हैं जिनपर खुदा की कृपादृष्टि रही है— वे नबी, सिद्दीक़, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे कितने अच्छे साथी हैं।”

(कुरआन, 4:69)

□ **आखिरत में सफलता पाने के लिए मुझे कितनी कोशिश करनी चाहिए?**

“और जो आखिरत चाहता हो उसके लिए ऐसा प्रयास भी करे जैसा कि उसके लिए प्रयास करना चाहिए और वह हो मोमिन, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके प्रयास की क़द्र की जाएगी।” (कुरआन, 17:19)

□ **कुरआन पढ़ते समय मुझे क्या करना चाहिए?**

“अतः जब तुम कुरआन पढ़ने लगे तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए खुदा की पनाह माँग लिया करो। उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।”

(कुरआन, 16:98-99)

### ❑ मेरे प्रयास कब बरबाद न होंगे?

“फिर जो अच्छे कर्म करेगा, शर्त यह कि वह मोमिन हो, तो उसके प्रयास की उपेक्षा न होगी। हम तो उसके लिए उसे लिख रहे हैं।”

(कुरआन, 21:94)

### ❑ इस जीवन रूपी इम्तिहान में मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

“तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी और तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें तुमसे पहले किताब प्रदान की गई थी और उन लोगों से, जिन्होंने ‘शिरक’ किया, बहुत-सी कष्टप्रद बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु यदि तुम जमे रहे और (खुदा का) डर रखा, तो यह उन कर्मों में से है जो आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।”

(कुरआन, 3:186)

### ❑ मुझे दोगुना सवाब कब मिलता है?

“ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दोगुना कर दिया जाएगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोजी हमने उन्हें दी है, उसमें से खर्च (दान) करते हैं।”

(कुरआन, 28:54)

### ❑ मैं किन कामों पर खुशखबरी सुनने का हक़दार हो सकता हूँ?

“उसी के आज्ञाकारी बनकर रहो और विनम्रता अपनानेवालों को शुभ सूचना दे दो। ये वे लोग हैं कि जब खुदा को याद किया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जो मुसीबत उन पर आती है उस पर धैर्य से काम लेते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं।”

(कुरआन, 22:34-35)

### ❑ मुझे किससे नहीं डरना चाहिए?

“तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करने का मामला न करना। जो लोग उस विधान के अनुसार फैसला न करें, जिसे खुदा ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग विधर्मी हैं।”

(कुरआन, 5:44)

“वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न डरो,

बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।” (कुरआन, 3:175)

### □ मैं सही रास्ता कैसे पा सकता हूँ?

“खुदा का आज्ञापालन करो और उसके रसूल का कहा मानो। परन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो उसपर तो बस वही ज़िम्मेदारी है जिसका बोझ उसपर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुमपर डाला गया है। और यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो मार्ग पा लोगे। और रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।”

(कुरआन, 24:54)

### □ मुझे बुरा खयाल आए तो मैं क्या करूँ?

“जो डर रखते हैं, उन्हें जब शैतान की ओर से कोई खयाल छू जाता है, तो वे चौंक उठते हैं। फिर वे साफ़ देखने लगते हैं। और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींच लिए जाते हैं, फिर वे कोई कमी नहीं करते।”

(कुरआन, 7:201-202)

### □ मुझे किस पर भरोसा करना चाहिए?

“(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो खुदा की ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छूट जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो खुदा पर भरोसा करो। निस्संदेह खुदा को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।”

(कुरआन, 3:159)

“उनके रसूलों ने उनसे कहा : हम तो वास्तव में बस तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, किन्तु खुदा अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है एहसान करता है और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई प्रमाण ले आएँ। यह तो बस खुदा के आदेश के पश्चात ही संभव है; और खुदा ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए। आखिर हमें क्या हुआ है कि हम खुदा पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाए हैं? तुम हमें जो तकलीफ़ पहुँचा रहे

हो उसके मुक्काबले में हम धैर्य से काम लेंगे। भरोसा करनेवालों को तो खुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।” (कुरआन, 14:11-12)

“अतएव हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में भेजा है जिससे पहले कितने ही समुदाय गुजर चुके हैं, ताकि हमने तुम्हारी ओर जो प्रकाशना की है, उसे उनको सुना दो, यद्यपि वे रहमान (दयावान प्रभु) के साथ इनकार की नीति अपनाए हुए हैं। कह दो : वही मेरा पालनहार प्रभु है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मुझे पलटकर जाना है।” (कुरआन, 13:30)

“और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो खुदा पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही खुदा अपना काम पूरा करके रहता है। खुदा ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा नियत कर रखा है।” (कुरआन, 65:3)

“खुदा ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में छिपा है, और हर मामला उसी की ओर पलटता है। अतः उसी की बन्दगी करो और उसी पर भरोसा रखो। जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा खब बेखबर नहीं है।” (कुरआन, 11:123)

“उसने यह भी कहा : ऐ मेरे बेटो! एक द्वार से प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना, यद्यपि मैं खुदा के मुक्काबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता। आदेश तो बस खुदा ही का चलता है। उसी पर मैंने भरोसा किया और भरोसा करनेवालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।” (कुरआन, 12:67)

“और वे दावा तो आज्ञापालन का करते हैं, परन्तु जब तुम्हारे पास से हटते हैं तो उनमें एक गिरोह अपने कथन के विपरीत रात में षड्यंत्र करता है। जो कुछ वे षड्यंत्र करते हैं, अल्लाह उसे लिख रहा है। तो तुम उनसे रुख फेर लो और खुदा पर भरोसा रखो, और खुदा का कार्यसाधक होना काफ़ी है।” (कुरआन, 4:81)

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुमपर



किया है, जबकि कुछ लोगों ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने का निश्चय कर लिया था तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिए। खुदा का डर रखो, और ईमानवालों को खुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।” (कुरआन, 5:11)

“यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?’ तो वे अवश्य कहेंगे : ‘खुदा ने।’ कहो : ‘तुम्हारा क्या विचार है? यदि खुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे तो क्या खुदा से हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे उसकी पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं? या वह मुझपर कोई दयालुता दर्शानी चाहे तो क्या वे उसकी दयालुता को रोक सकते हैं?’ कह दो: ‘मेरे लिए खुदा काफ़ी है। भरोसा करनेवाले उसी पर भरोसा करते हैं।’”

(कुरआन, 39:38)

□ मेरे दिल की बेचैनी कैसे दूर हो सकती है?

“ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को खुदा के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, खुदा के स्मरण से दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।”

(कुरआन, 13:28)

□ मेरा बुरा साथी कौन है?

“वे जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं और खुदा ने अपने उदार दान से जो कुछ उन्हें दे रखा होता है, उसे छिपाते हैं, तो हमने अकृतज्ञ लोगों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं, न खुदा पर ईमान रखते हैं, न अंतिम दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हुआ, तो वह बहुत बुरा साथी है।”

(कुरआन, 4:37-38)

□ क्या कोई बुरा काम करके मैं खुदा से बच सकता हूँ?

“उन लोगों ने, जो बुरे कर्म करते हैं, यह समझ रखा है कि वे हमारे क़ाबू से बाहर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो फ़ैसला वे कर रहे हैं।”

(कुरआन, 29:4)

□ क्या मैं अपने ऊपर किए गए अन्याय का बदला ले सकता हूँ?

“भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ठ मित्र है।”

(कुरआन, 41:34)

“और जो ऐसे हैं कि जब उनपर ज्यादाती होती है तो वे प्रतिशोध लेते हैं। बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला खुदा के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। और जो कोई अपने ऊपर जुल्म होने के पश्चात बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं। इलज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और धरती में नाहक ज्यादाती करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है। किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।”

(कुरआन, 42:39-43)

“और यदि तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें कष्ट पहुँचा हो, किन्तु यदि तुम सब्र करो तो निश्चय ही यह सब सब्र करनेवालों के लिए ज्यादा अच्छा है।”

(कुरआन, 16:126)

□ अगर कोई मेरे साथ बुराई करे और मैं उसे माफ़ कर दूँ तो मुझे क्या मिलेगा?

“ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दुगुना दिया जाएगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी हमने उन्हें दी है, उसमें से खर्च करते हैं।”

(कुरआन, 28:54)

“और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से खुले और छिपे खर्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आखिरत के घर का अच्छा परिणाम है।”

(कुरआन, 13:22)

## ❑ मैं लोगों को खुदा के दीन की तरफ कैसे बुलाऊँ?

“अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं।” (कुरआन, 16:125)

## ❑ मुझे क्या चीज़ छोड़नी चाहिए?

“और उसे न खाओ जिसपर खुदा का नाम न लिया गया हो। निश्चय ही वह तो आज्ञा का उल्लंघन है। शैतान तो अपने मित्रों के दिलों में डालते हैं कि वे तुमसे झगड़ें। यदि तुमने उनकी बात मान ली तो निश्चय ही तुम बहुदेववादी होगे।” (कुरआन, 6:121)

## ❑ अगर मैं खुदा का आज्ञापालन न करूँ तो क्या होगा?

“परन्तु जो खुदा और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे खुदा आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।” (कुरआन, 4:14)

## ❑ जब मुझे गुस्सा आए तो मुझे क्या करना चाहिए?

“(खुदा के प्यारे बन्दे वे हैं) जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) क्रोध आता है तो वे क्षमा कर देते हैं।” (कुरआन, 42:37)

## ❑ मुझे किन चीज़ों से खुदा की शरण लेनी चाहिए?

“कहो : मैं शरण लेता हूँ प्रकट करनेवाले रब की, जो कुछ भी उसने पैदा किया उसकी बुराई से, और अंधेरे की बुराई से जबकि वह घुस आए, और गाँठों में फूँक मारनेवालों (या फूँक मारनेवालियों) की बुराई से, और ईर्ष्यालु की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।” (कुरआन, 113:1-5)

“कहो : मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से, जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसत्रसा डालना है। जो जिनमें से भी होता

है और मनुष्यों में से भी।”

(कुरआन, 114:1-6)

### □ मुझे किस का कहना न मानना चाहिए?

“अतः तुम झुठलानेवालों का कहना न मानना। वे चाहते हैं कि तुम ढीले पड़ो, इस कारण वे चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं। तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जो बहुत क्रसमें खानेवाला, हीन है, कचोके लगाता, चुगलियाँ खाता फिरता है, भलाई से रोकता है, सीमा का उल्लंघन करनेवाला, हक्र मारनेवाला है, क्रूर है, फिर अधम भी।”

(कुरआन, 68:8-13)

### □ क्या मुझे अच्छे या बुरे कार्य करने के असीमित अवसर प्राप्त होंगे?

“हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु हो जाए और उस समय वह कहने लगे : ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ थोड़े समय तक और मुहलत क्यों न दी कि मैं सदक्का (दान) करता (मुझे मुहलत दे कि मैं सदक्का करूँ) और अच्छे लोगों में शामिल हो जाऊँ।”

(कुरआन, 63:10)

### □ क्या मेरे गुनाहों का बोझ कोई दूसरा व्यक्ति उठा सकता है?

“कहो : जो अपराध हमने किए, उसकी पूछ तुमसे न होगी और न उसकी पूछ हमसे होगी जो तुम कर रहे हो।”

(कुरआन, 34:25)

“कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और यदि कोई बोझ से दबा हुआ व्यक्ति अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, यद्यपि वह निकट का सम्बन्धी ही क्यों न हो। तुम तो केवल सावधान कर रहे हो। जो परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और नमाज़ के पाबन्द हो चुके हैं (उनकी आत्मा का विकास हो गया)। और जिसने स्वयं को विकसित किया वह अपने ही भले के लिए अपने आपको विकसित करेगा। और पलटकर जाना तो खुदा ही की ओर है।”

(कुरआन, 35:18)

❑ क्या किसी व्यक्ति के गुनाह का प्रभाव मुझपर पड़ सकता है?

“जिस किसी ने अच्छा कर्म किया तो अपने ही लिए और जिस किसी ने बुराई की तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा। वास्तव में तुम्हारा रब अपने बन्दों पर तनिक भी जुल्म नहीं करता।” (कुरआन, 41:46)

“निश्चय ही हमने लोगों के लिए हक के साथ तुमपर किताब अवतरित की है। अतः जिसने सीधा मार्ग ग्रहण किया तो अपने ही लिए, और जो भटका, तो वह भटककर अपने ही को हानि पहुँचाता है। तुम उनके जिम्मेदार नहीं हो।” (कुरआन, 39:41)

“जो कोई अच्छा कर्म करता है तो अपने ही लिए करेगा और जो कोई बुरा कर्म करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा। फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे।” (कुरआन, 45:15)

❑ क्या जन्नत में मेरी सभी इच्छाएँ पूरी हो सकती हैं?

“हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे सहचर मित्र हैं और आखिरत में भी। और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ है, जिसकी इच्छा तुम्हारे जी को होगी। और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा, जिसकी तुम माँग करोगे।” (कुरआन, 41:31)

❑ मुझे अपने जीवन में किसे नमूना बनाना चाहिए?

“निस्संदेह तुम्हारे लिए खुदा के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो खुदा और अंतिम दिन की आशा रखता हो और खुदा को अधिक याद करे।” (कुरआन, 33:21)

❑ खुदा की दृष्टि में मेरी कामयाबी से क्या मतलब है?

“प्रत्येक जीव मृत्यु का मज्जा चखनेवाला है, और तुम्हें तो क्रियामत के दिन पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा। अतः जिसे आग (जहन्नम) से हटाकर जन्नत में दाखिल कर दिया गया, वह सफल रहा। रहा सांसारिक जीवन, तो वह माया-सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं।” (कुरआन, 3:185)

### □ क्या मेरा खुदा से कोई सौदा हुआ है?

“निस्संदेह खुदा ने ईमानवालों से उनके प्राण और उनके माल इसके बदले में खरीद लिए हैं कि उनके लिए जन्नत है।” (कुरआन, 9:111)

### □ मेरे कार्य सही कैसे हो सकते हैं?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो और बात कहो ठीक सधी हुई। वह तुम्हारे कर्मों को सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।”

(कुरआन, 33:70-71)

### □ मेरे लिए सबसे बड़ी कामयाबी क्या है?

“मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से खुदा ने ऐसे बागों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बागों में पवित्र गृहों का (भी वादा है) और खुदा की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का, जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।” (कुरआन, 9:72)

### □ खुदा से डरने पर आखिरत में मुझे क्या लाभ होगा?

“जो कोई खुदा का डर रखेगा उसके लिए वह (परेशानी से) निकलने की राह पैदा कर देगा। और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो खुदा पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही खुदा अपना काम पूरा करके रहता है। खुदा ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा नियत कर रखा है।”

(कुरआन, 65:2-3)

“निस्संदेह डर रखनेवाले निश्चिन्तता की जगह होंगे, बागों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए, एक दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे। ऐसा ही उनके साथ मामला होगा। और हम साफ़ गोरी, बड़ी आँखोंवाली स्त्रियों से उनका विवाह कर देंगे। वे वहाँ निश्चिन्तता के साथ हर प्रकार के स्वादिष्ट फल मँगवाते होंगे। वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे। बस पहली मृत्यु जो हुई, सो हुई। और उसने उन्हें भड़कती हुई आग की यातना से बचा लिया। यह सब तुम्हारे रब के विशेष उदार अनुग्रह के कारण होगा, वही बड़ी सफलता है।”

(कुरआन, 44:51-57)

“और जो कोई खुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे और खुदा से डरे और उसकी सीमाओं का खयाल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।”  
(कुरआन, 24:52)

“और बद्र में (बद्र की लड़ाई में) खुदा तुम्हारी सहायता कर भी चुका था, जबकि तुम बहुत कमजोर हालत में थे। अतः खुदा ही का डर रखो, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।”  
(कुरआन, 3:123)

#### □ ईमान लाने के अतिरिक्त मुझे और क्या करना चाहिए?

“अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें उनका रब अपनी दयालुता में दाखिल करेगा, यही स्पष्ट सफलता है।”

(कुरआन, 45:30)

“निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वही है बड़ी सफलता।”

(कुरआन, 85:11)

#### □ ईमान लाने के बाद भी क्या खुदा मेरा इम्तिहान लेगा?

“क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएंगे कि ‘हम ईमान लाए’ और उनकी परीक्षा न की जाएगी? हालाँकि हम उन लोगों की परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले गुजर चुके हैं। अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा, जो सच्चे हैं। और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा।”

(कुरआन, 29:2-3)

#### □ मुझे किस चीज़ को पाने के लिए बहुत अधिक कोशिश करनी चाहिए?

“और खुदा और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए। और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को माफ़ करते हैं—और खुदा को भी ऐसे

लोग प्रिय हैं, जो अच्छा कर्म करते हैं। और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर जुल्म करते हैं, तो तत्काल खुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं— और खुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहीं बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।”

(कुरआन, 3:132-136)

□ वे कौन से काम हैं जिन्हें करने से मैं खुदा के विशेष बन्दों (उपासकों) में शामिल हो सकता हूँ?

“रहमान के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं : तुमको सलाम। जो अपने रब के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं। जो कहते हैं कि : ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे। निश्चय ही उसकी यातना चिमटकर रहनेवाली है। निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृष्टि से भी बुरी है और स्थान की दृष्टि से भी। जो खर्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम लेते हैं बल्कि वे इनके बीच मध्य मार्ग पर रहते हैं। जो खुदा के साथ किसी दूसरे इष्ट-पूज्य को नहीं पुकारते और न नाहक किसी जीव को जिस (के क़त्ल) को खुदा ने हराम किया है, क़त्ल करते हैं। और न व्यभिचार करते हैं— जो कोई यह काम करे वह गुनाह के बबाल से दो-चार होगा। क्रियामत के दिन उसकी यातना बढ़ती चली जाएगी। और वह उसी में अपमानित होकर स्थायी रूप से पड़ा रहेगा। सिवाय उसके जो पलट आया और ईमान लाया और अच्छा कर्म किया तो ऐसे लोगों की बुराइयों को खुदा भलाईयों से बदल देगा। और खुदा है भी अत्यन्त क्षमाशील दयावान। और जिसने तौबा की और अच्छा कर्म किया तो निश्चय ही वह खुदा की ओर पलटता है, जैसा कि पलटने का हक़ है। जो किसी झूठ और असत्य में सम्मिलित नहीं होते और जब किसी व्यर्थ के कामों के पास से गुज़रते हैं, तो सज्जनतापूर्वक गुज़र जाते हैं, जो ऐसे हैं कि जब उनके रब की आयतों के द्वारा उन्हें याददिहानी कराई



जाती है तो उन (आयतों) पर वे अंधे और बहरे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं : ऐ हमारे रब! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आंखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का नायक बना दे। यही वे लोग हैं जिन्हें, इसके बदले में कि वे जमे रहे, उच्च भवन प्राप्त होगा, तथा ज़िन्दाबाद और सलाम से उनका वहाँ स्वागत होगा। वहाँ वे सदैव रहेंगे। बहुत ही अच्छी है वह ठहरने की जगह और स्थान। कह दो : मेरे रब को तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर (उसको) न पुकारो। अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो शीघ्र ही वह चीज़ चिमट जानेवाली होगी।” (कुरआन, 25:63-77)

### □ अनजाने में की गई ग़लती पर क्या मुझे गुनाह होगा?

“उन्हें उनके बापों का बेटा कह कर पुकारो। खुदा के यहाँ यही अधिक न्यायसंगत बात है। और यदि तुम उनके बापों को न जानते हो, तो धर्म में वे तुम्हारे भाई तो हैं ही और तुम्हारे सहचर भी। इस सिलसिले में तुमसे जो ग़लती हुई हो उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, किन्तु जिसका संकल्प तुम्हारे दिलों ने कर लिया, उसकी बात और है। वास्तव में खुदा अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।” (कुरआन, 33:5)

### □ मुझे किस काम में लोगों से होड़ (Competition) करनी चाहिए?

“प्रत्येक की एक ही दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ। जहाँ कहीं भी तुम होगे खुदा तुम सबको एकत्र करेगा। निस्संदेह खुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

(कुरआन, 2:148)

### □ क्या मुझे खुदा की रहमत से निराश होना चाहिए?

“ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और खुदा की सदयता से निराश न हो। खुदा की सदयता से तो केवल कुफ़र करनेवाले निराश होते हैं।”

(कुरआन, 12:87)

“उन्होंने कहा : हम तुम्हें सच्ची शुभ सूचना दे रहे हैं, तो तुम निराश न हो। उसने कहा : अपने रब की दयालुता से पथभ्रष्टों के सिवा और कौन निराश होगा?”

(कुरआन, 15:55-56)

❑ कौन-सी चीज़ मुझे खुदा की याद से रोक सकती है?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे माल तुम्हें खुदा की याद से गाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।”  
(कुरआन, 63:9)

❑ मुझे किस काम में विशेष तौर पर सुस्ती न करनी चाहिए?

“जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियों के साथ, और मेरी याद में ढीले मत पड़ना।”  
(कुरआन, 20:42)

❑ मैं खुदा को याद न करूँ तो क्या होगा?

“और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क्रियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे। वह कहेगा : ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था? वह (खुदा) कहेगा : इसी प्रकार (तू संसार में अंधा रहा था)। तेरे पास मेरी आयतें आई थीं, तो तूने उन्हें भुला दिया था। उसी प्रकार आज तुझे भुलाया जा रहा है।”

(कुरआन, 20:124-126)

❑ खुदा मुझे कब याद करेगा?

“अतः तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।”

(कुरआन, 2:152)

❑ मैं ग़लत कामों से कैसे बच सकता हूँ?

“उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और अल्लाह का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।”  
(कुरआन, 29:45)

❑ क्या मैं अपनी पत्नी को मट्टर देने से बच सकता हूँ?

“और स्त्रियों को उनके मट्टर खुशी से अदा करो। हाँ, यदि वे अपनी खुशी से उसमें से तुम्हारे लिए छोड़ दें तो उसे तुम अच्छा और पाक समझकर

खाओ।”

(कुरआन, 4:4)

□ मैं खुदा से कैसे दोस्ती कर सकता हूँ?

“कह दो : यदि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, खुदा भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। खुदा बड़ा क्षमाशील, दयावान है।”

(कुरआन, 3:31)

□ क्या खुदा मुझे देख रहा है?

“अतः शीघ्र ही तुम याद करोगे, जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ। मैं तो अपना मामला खुदा को सौंपता हूँ। निस्संदेह खुदा की दृष्टि सब बन्दों पर है।”

(कुरआन, 40:44)

□ मेरे लिए खुदा से क्षमा माँगने का सबसे उत्तम समय कौन-सा है?

“और वही प्रातः की घड़ियों में क्षमा की प्रार्थना करते थे।”

(कुरआन, 51:18)

□ नादानी में मुझसे कोई बुरा काम हो जाए तो मैं क्या करूँ?

“और जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ, जो हमारी आयतों को मानते हैं, तो कहो : सलाम हो तुमपर! तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि तुम में से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके पश्चात् पलट आए और अपना सुधार कर ले तो यह है कि वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।”

(कुरआन, 6:54)

□ मेरे जीवन में तंगी (विभिन्न चीज़ों में कमी) क्यों होती है?

“और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क्रियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे।”

(कुरआन, 20:124)

□ मैं लोगों से कैसा व्यवहार न करूँ?

“और लोगों से अपना रुख न फेर और न धरती में इतराकर चल। निश्चय ही खुदा किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।”

(कुरआन, 31:18)

### ❑ मुझे किसके साथ रहना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।”  
(कुरआन, 9:119)

### ❑ खुदा मेरे इम्तिहान से क्या चाहता है?

“क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि ‘हम ईमान लाए’ और उनकी परीक्षा न की जाएगी? हालाँकि हम उन लोगों की परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। खुदा तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा, जो सच्चे हैं। और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा।”  
(कुरआन, 29:2-3)

### ❑ मेरा इम्तिहान विशेष तौर पर किन चीज़ों में होता है?

“और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान परीक्षा-सामग्री हैं और यह कि खुदा के पास बड़ा प्रतिदान है।”  
(कुरआन, 8:28)

### ❑ क्या मुझे स्वयं को नेक कहना चाहिए?

“वे लोग जो बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं, यह और बात है कि संयोगवश कोई छोटी बुराई उनसे हो जाए। निश्चय ही तुम्हारा रब क्षमाशीलता में बड़ा व्यापक है। वह तुम्हें उस समय से भली-भाँति जानता है, जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माँओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में थे। अतः अपने मन की पवित्रता और निखार का दावा न करो। वह उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है, जिसने डर रखा।”

(कुरआन, 53:32)

### ❑ दुनिया में मेरा जीवन कैसे अच्छा गुज़र सकता है?

“जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे, उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।”  
(कुरआन, 16:97)

### □ क्या मुझे लोगों का मज़ाक़ (परिहास) उड़ाना चाहिए?

“ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई ग़िरोह दूसरे पुरुषों की हंसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात् अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति ज़ालिम हैं।”

(कुरआन, 49:11)

### □ क्या मैं किसी की ग़ीबत (पीठ पीछे निन्दा) कर सकता हूँ?

“ऐ ईमान लानेवालो! बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का मांस खाए? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही।— और खुदा का डर रखो। निश्चय ही खुदा तौबा क़बूल करनावाला, अत्यन्त दयावान है।”

(कुरआन, 49:12)

### □ मुझे किस काम से बचना चाहिए?

“कह दो : आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं : यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करो और निर्धनता के कारण अपनी संतान की हत्या न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के निकट न जाओ, चाहे वे खुली हुई हों या छुपी हुई हों। और किसी जीव की, जिसे खुदा ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो। यह और बात है कि न्याय के लिए ऐसा करना पड़े। ये बातें हैं, जिनकी ताकीद उसने तुम्हें की है, शायद कि तुम बुद्धि से काम लो।”

(कुरआन, 6:151)

### □ मुझे गुप्त परामर्श किस काम में करना चाहिए और किस में नहीं?

“ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम आपस में गुप्त वार्ता करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की गुप्त वार्ता न करो, बल्कि नेकी और

परहेज़गारी के विषय में आपस में एकान्त वार्ता करो। और खुदा का डर रखो, जिसके पास तुम इकट्ठे होगे।” (कुरआन, 58:9)

❑ क्या कभी मुझे शक भी करना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं।” (कुरआन, 49:12)

❑ बुरे काम मेरे सामने हों तो मुझे क्या करना चाहिए?

“जो किसी झूठ और असत्य में सम्मिलित नहीं होते और जब किसी व्यर्थ के कामों के पास से गुज़रते हैं, तो सज्जनतापूर्वक गुज़र जाते हैं।” (कुरआन, 25:72)

❑ मुझे क्या काम करना चाहिए?

“उठो और सावधान करने में लग जाओ। और अपने रब की बड़ाई ही करो। अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो। अपनी कोशिशों को अधिक समझकर उसके क्रम को भंग न करो और अपने रब के लिए धैर्य ही से काम लो।” (कुरआन, 74:2-7)

❑ जब खुदा की बातों का मज़ाक़ (परिहास) बनाया जा रहा हो तो मुझे क्या करना चाहिए?

“वह ‘किताब’ में तुमपर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि खुदा की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उनका उपहास किया जा रहा है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ, उनके साथ न बैठो, अन्यथा तुम भी उन्हीं जैसे होगे। निश्चय ही खुदा कपटाचारियों और इनकार करनेवालों—सबको जहन्नम में एकत्र करनेवाला है।” (कुरआन, 4:140)

❑ मुझे कैसे नसीहत व बहस करनी चाहिए?

“अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं।” (कुरआन, 16:125)

□ मुझे अपने और दूसरों के घर में कैसे प्रवेश करना चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रवेश न करो, जब तक कि रज़ामंदी हासिल न कर लो और उन घरवालों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, कदाचित्त तुम ध्यान रखो। फिर यदि उनमें किसी को न पाओ, तो उनमें प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें अनुमति प्राप्त न हो। और यदि तुमसे कहा जाए कि वापस हो जाओ तो वापस हो जाओ, यही तुम्हारे लिए अधिक अच्छी बात है। खुदा भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते हो।”  
(कुरआन, 24:27-28)

□ जब मैं किसी काम को करने का संकल्प करूँ तो मुझे क्या कहना चाहिए?

“बल्कि खुदा की इच्छा ही लागू होती है। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद कर लो और कहो : आशा है कि मेरा रब इससे भी करीब सही बात की ओर मार्गदर्शन कर दे।”  
(कुरआन, 18:24)

□ मुझे अपने धन को कैसे खर्च करना चाहिए?

“जो खर्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य मार्ग अपनाते हैं।” (कुरआन, 25:67)

“और नातेदारों को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी—और फ़िज़ूलखर्ची न करो।”  
(कुरआन, 17:26)

□ जब मैं किसी की सहायता न कर सकूँ तो क्या करूँ?

“किन्तु यदि तुम्हें अपने रब की दयालुता की खोज में, जिसकी तुम आशा रखते हो, उनसे कतराना भी पड़े, तो इस दशा में तुम उनसे नर्म बातें करो।”  
(कुरआन, 17:28)

□ मुझे किसका साथ देना चाहिए और किसका साथ न देना चाहिए?

“हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। खुदा का डर रखो, निश्चय ही खुदा बड़ा कठोर दण्ड देनेवाला है।”

(कुरआन, 5:2)

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।” (कुरआन, 9:119)

□ मैं जन्नत कब पा सकता हूँ?

“रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए वही जन्नतवाले हैं, वे सदैव उसी में रहेंगे।” (कुरआन, 2:82)

□ लोगों का झगड़ा कैसे निबटाऊँ?

“निस्संदेह हमने यह किताब हक्र के साथ उतारी है, ताकि खुदा ने जो कुछ तुम्हें दिखाया है उसके अनुसार लोगों के बीच फ़ैसला करो। और तुम विश्वासघाती लोगों की ओर से झगड़नेवाले न बनो।” (कुरआन, 4:105)

“निश्चय ही खुदा न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक्र) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।” (कुरआन, 16:90)

“यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह खुदा के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, और इंसाफ़ करो। निश्चय ही खुदा इंसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है। मोमिन तो भाई-भाई हैं, अतः अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दो और खुदा का डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए।” (कुरआन, 49:9-10)

□ समाज में विभिन्न ख़ानदानों के होने को मैं क्या समझूँ?

“ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में खुदा के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही खुदा सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।” (कुरआन, 49:13)



## ❑ दूसरों की चीज़ों के बारे में मेरा व्यवहार कैसा हो?

“ऐ ईमान लानेवालो! जानते-बूझते तुम खुदा और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करना और न अपनी अमानतों में खियानत करना।”

(कुरआन, 8:27)

“खुदा तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक़ फ़ैसला करो। खुदा तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्संदेह, खुदा सब कुछ सुनता-देखता है।”

(कुरआन, 4:58)

“ऐ ईमान लानेवालो! आपस में एक-दूसरे के माल ग़लत तरीक़े से न खाओ— यह और बात है कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा हो— और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह खुदा तुमपर बहुत दयावान है।”

(कुरआन, 4:29)

## ❑ मुझे किस बात पर खुश होना चाहिए?

“कह दो : यह खुदा के अनुग्रह और उसकी दया से है, अतः इसपर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। यह उन सब चीज़ों से उत्तम है, जिनको वे इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।”

(कुरआन, 10:58)

## ❑ कुरआन की मेरे लिए क्या हैसियत है?

“यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुँज है, और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।”

(कुरआन, 45:20)

## ❑ क्या मेरे लिए कुरआन को समझना कठिन है?

“और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?”

(कुरआन, 54:17)

## ❑ मेरे दिल में नर्मी कैसे आ सकती है?

“क्या उन लोगों के लिए, जो ईमान लाए, अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल खुदा की याद के लिए और जो सत्य अवतरित हुआ है उसके

लिए झुक जाएँ? और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें किताब दी गई थी, फिर उनपर दीर्घ समय बीत गया। अन्ततः उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से अधिकांश अवज्ञाकारी ही रहे।” (कुरआन, 57:16)

### □ मुझे नमाज़ क्यों पढ़नी चाहिए?

“उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और खुदा का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। खुदा जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।” (कुरआन, 29:45)

### □ माँगनेवालों से मेरा व्यवहार कैसा हो?

“और जो माँगता हो उसे न झिड़कना।” (कुरआन, 93:10)

### □ जो कुछ मैं खुदा के रास्ते में खर्च करता हूँ उसका क्या होगा?

“निश्चय ही जो सदक़ा देनेवाले पुरुष और सदक़ा देनेवाली स्त्रियाँ हैं और उन्होंने खुदा को अच्छा ऋण दिया, उसे उनके लिए कई गुना कर दिया जाएगा। और उनके लिए सम्मानित प्रतिदान है।” (कुरआन, 57:18)

“यदि तुम खुदा को अच्छा ऋण दो तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। खुदा बड़ा गुणग्राहक और सहनशील है।” (कुरआन, 64:17)

### □ मुझे खुदा के रास्ते में कितना खर्च करना चाहिए?

“और वे तुमसे पूछते हैं, कितना खर्च करें? कहो : जो आवश्यकता से अधिक हो।” (कुरआन, 2:219)

### □ मुझे खुदा के रास्ते में कहाँ खर्च करना चाहिए?

“वे पूछते हैं : ‘कितना खर्च करें?’ कहो : (पहले यह समझ लो कि) जो माल भी तुमने खर्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों, और मुहताजों और मुसाफ़ि़रों के लिए खर्च हुआ है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्संदेह खुदा उसे भली-भाँति जान लेगा।” (कुरआन, 2:216)

❑ क्या आखिरत में मेरे शारीरिक अंगों का भी हिसाब लिया जाएगा?

“निस्संदेह कान और आँख और दिल इनमें से प्रत्येक के विषय में पूछा जाएगा।”  
(कुरआन, 17:36)

❑ क्या मैं बिना ज्ञान के कार्यवाई कर सकता हूँ?

“और जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान न हो उसके पीछे न लगे।”

(कुरआन, 17:36)

“ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।”

(कुरआन, 49:6)

❑ क्या मैं रिश्वत ले सकता हूँ?

“और आपस में तुम एक-दूसरे के माल को अवैध रूप से न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के आगे ले जाओ कि (हक़ मारकर) लोगों के कुछ माल जानते-बूझते हड़प सको।”

(कुरआन, 2:188)

❑ मुझे किस काम के लिए सिफ़ारिश करनी चाहिए और किस काम के लिए नहीं?

“जो कोई अच्छी सिफ़ारिश करेगा, उसे उसके कारण प्रतिदान मिलेगा और जो बुरी सिफ़ारिश करेगा तो उसके कारण उसका बोझ उसपर पड़कर रहेगा। खुदा को तो हर चीज़ पर क़ाबू हासिल है।”

(कुरआन, 4:85)

❑ जुआ और शराब को मैं क्या समझूँ?

“तुमसे शराब और जुए के विषय में पूछते हैं। कहो : उन दोनों चीज़ों से बड़ा गुनाह है, यद्यपि लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, परन्तु उनका गुनाह उनके फ़ायदे से कहीं बढ़कर है। और वे तुमसे पूछते हैं कितना खर्च करें? कहो : जो आवश्यकता से अधिक हो। इस प्रकार खुदा दुनिया और आखिरत के विषय में तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।”

(कुरआन, 2:219)

“ऐ ईमान लानेवालो! ये शराब और जुआ और देवस्थान और पाँसे तो गंदे शैतानी काम हैं। अतः तुम इनसे अलग रहो, ताकि तुम सफल रहो। शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें खुदा की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे?” (कुरआन, 5:90-91)

□ मुझे किस तरह गवाही देनी चाहिए?

“ऐ ईमान लानेवालो! खुदा के लिए गवाही देते हुए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) खुदा को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो खुदा को उसकी खबर रहेगी।”

(कुरआन, 4:135)

“और सत्य में असत्य कां घाल-मेल न करो और जानते-बूझते सत्य को छिपाओ मत।” (कुरआन, 2:42)

“और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिसपर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और खुदा का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो खुदा उसे भली-भाँति जानता है।” (कुरआन, 2:283)

□ मैं अपने कर्ज़दार से कैसा व्यवहार रखूँ?

“और यदि कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मोहलत देनी होगी, और सदक्का कर दो, (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जान सको।” (कुरआन, 2:280)

### □ खुदा का मुझपर सबसे बड़ा एहसान क्या है?

“वे तुमपर एहसान जताते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। कह दो : मुझपर अपने इस्लाम का एहसान न रखो, बल्कि यदि तुम सच्चे हो तो खुदा ही तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान की राह दिखाई।”

(कुरआन, 49:17)

### □ अगर मैं सभी पैग़म्बरों को न मानूँ तो क्या होगा?

“जो लोग खुदा और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि खुदा और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि ‘हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते’ और इस तरह वे चाहते हैं कि बीच की कोई राह अपनाएँ; वही लोग पक्के इनकार करनेवाले हैं और हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।”

(कुरआन, 4:150-151)

### □ वे कौन-से काम हैं जिनके करने से मैं मुनाफ़िक़ बन सकता हूँ?

“मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं और हाथों को बन्द किए रहते हैं। वे खुदा को भूल बैठे तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निश्चय ही मुनाफ़िक़ अवज्ञाकारी हैं।”

(कुरआन, 9:67)

### □ दीन (इस्लाम) की बातें बताने में मुझे किस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

“धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और खुदा पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। खुदा सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।” (कुरआन, 2:256)

### □ दूसरे धर्मों के माननेवालों के उपास्यों को क्या मुझे बुरा कहना चाहिए?

“खुदा को छोड़कर जिन्हें ये पुकारते हैं, तुम लोग उनके प्रति अपशब्द

का प्रयोग न करो।” (कुरआन, 6:109)

□ खुदा मेरा साथी कब बनता है?

“वे खुदा के मुक़ाबले में तुम्हारे कदापि कुछ काम नहीं आ सकते। निश्चय ही ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और डर रखनेवालों का साथी खुदा है।” (कुरआन, 45:19)

□ खुदा मेरा सहायक कब बनता है?

“निश्चय ही खुदा उनके साथ है जो डर रखते हैं और जो उत्तमकार हैं।” (कुरआन, 16:128)

□ यतीम (अनाथ) के साथ मेरा व्यवहार कैसा हो?

“अतः जो अनाथ हो उसे मत दबाना।” (कुरआन, 93:9)

“जो लोग अनार्थों के माल अन्याय के साथ खाते हैं, वास्तव में वे अपने पेट आग से भरते हैं, और वे अवश्य भड़कती हुई आग में पड़ेंगे।” (कुरआन, 4:10)

□ मेरा शत्रु कौन है?

“ऐ ईमान लानेवालो! तुम सब इस्लाम में दाखिल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।” (कुरआन, 2:182)

□ क्या मुझे अच्छा या बुरा कोई काम करने की सम्पूर्ण आज्ञा दी है?

“जो लोग हमारी आयतों में कुटिलता की नीति अपनाते हैं वे हमसे छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति आग में डाला जाए वह अच्छा है या वह जो क्रियामत के दिन निश्चिन्त होकर आएगा? जो चाहो कर लो, तुम जो कुछ करते हो वह तो उसे देख ही रहा है।” (कुरआन, 41:40)

—: समाप्त :—

